Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार-बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 46

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

25 रबीयुल अव्वल 1441 हिज्री कमरी 12 नबुव्वत 1399 हिज्री शम्सी 12 नवम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ज़ाहिर परस्ती से यहूदियों पर यह मुसीबत आई कि वह मसीह अलैहिस्सलाम का इन्कार करते रहे यही मुसीबत हमारे ज़माना के मौलवियों और मुल्लाओं को आई, वह प्रतीक्षा कर रहे हैं कि मसीह और महदी आकर लड़ाईयां करेगा परन्तु ख़ुदा तआला ने यह बात ही सम्मुख न रखी थी।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ख़ुदा तआला की क़समों में मअर्फ़त (अनुभूति) के भेद

अत: अल्लाह तआला की कसमें अपने अंदर असंख्य मार्फ़त भेद के रखती हैं। जिन को विवेकशील ही देख सकते हैं। अत: ख़ुदा तआला कसम के लिबास में अपने प्रकृति के स्पष्ट कानून की गवाही अपनी शरीयत के कई गूढ़ रहस्य हल करने के लिए प्रस्तुत करता है कि ख़ुदा तआला की क्रियात्मक किताब(क़ानूने क़ुदरत) इस की कथनीय किताब(क़ुरआन शरीफ़)पर गवाह हो जाए और इसके कथन और कर्म में आपस में समानता हो कर सच्चे अभिलाषी के लिए और अधिक मार्फ़त और सन्तोष और विश्वास का कारण हो और यह तरीक़ा क़ुरआन शरीफ़ में आम है। जैसे ख़ुदा तआला ब्रह्मुओं और इलहाम का इन्कार करने वालों पर यूं तर्क को पूरा करता है।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجۡعِ(अत्तारिक़:12) कसम है बादलों की जिन से मींह बरसता है। رَجۡعٌ बारिश को भी कहते हैं। बारिश का भी एक स्थायी नियम है। जैसे सूर्य के नियम है। रात और दिन का और सूर्य चन्द्र ग्रहण का भी एक-एक निज़ाम है। बीमारी का भी एक निज़ाम होता है। वैद्य उस निज़ाम के अनुसार कह सकता है कि अमुक़ दिन अकाल होगा। अत: ये निज़ाम हैं क्योंकि अल्लाह तआला का प्रकृति का क़ानून क़ुदरत अपनी एक श्रृंखला और सम्पूर्ण निज़ाम रखता है। और कोई कर्म उसका ऐसा नहीं जो निज़ाम और श्रृंखला से बाहर हो।

अल्लाह तआला जैसे यह चाहता है कि लोग उससे डरें। वैसे यह भी चाहता है कि लोगों में ज्ञान की रोशनी पैदा हो। और इससे वे मार्फ़त की मंज़िलें तय कर जाएं क्योंकि सच्चे ज्ञानों से परिचय जहां एक तरफ़ सच्चा भय पैदा करता है,वहां दूसरी तरफ़ इन ज्ञानों से ख़ुदा का भाय पैदा होता है। कई बदक़िस्मत ऐसे भी हैं जो ज्ञानों में डूब कर क़ज़ा क़दर से दूर जा पड़ते हैं और अल्लाह तआला के वजूद पर ही शंकाएं पैदा कर बैठते हैं और कई ऐसे हैं जो क़ज़ा क़दर के मानने वाले हो कर ज्ञान ही से दूर हो जाते हैं,परन्तु क़ुरआन शरीफ़ ने दोनों शिक्षाएं दी हैं और पूर्ण रूप तौर पर दी हैं। क़ुरआन शरीफ़ सच्चे ज्ञान से इस लिए परिचित करना चाहता है और इस लिए इधर इन्सान को इस तरफ़ ध्यान दिलाता है कि इससे अल्लाह

शेष पृष्ठ 9 पर

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आंहज़रत नमांज़ में यह दुआ मांगते

जुमा के दिन नहाने, मिस्वाक करने और ख़ुशबू लगाने का महत्व

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम में से कोई जुम्अ: के दिन आए तो चाहिए कि वह नहा ले।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जुमा के दिन नहाना हर बालिग़ पर ज़रूरी है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हर जवान पर जुमा के दिन नहाना ज़रूरी है और यह कि वह मिस्वाक भी किया करे और ख़ुशबू भी लगाए यदि मिल जाए।

(हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब फ़रमाते हैं अर्थात प्राथमिकता के दृष्टि से जुमा के दिन ग़ुसल ज़रूरी है। इसी तरह मिस्वाक करना और ख़ुशबू लगाना भी। ये सब बातें बतौर उत्तम होने के ज़रूरी हैं। परन्तु फ़र्ज़ नहीं कि बिना उनके नमाज़ ही न हो।

(सहीबुख़ारी, किताबुल जुम्अ:, प्रकाशन कादियान 2006ई)

अत: इस्लाम कहता है कि तुमको जंग में औरतों के मारने की आज्ञा नहीं तुमको बच्चों के मारने की आज्ञा नहीं। तुमको बूढ़ों के मारने की आज्ञा नहीं। तुमको वादा तोड़ने की आज्ञा नहीं। तुमको धोखा देने की आज्ञा नहीं। तुमको कत्ल हुए लोगों की नाक, कान काटने की आज्ञा नहीं। तुमको पादरियों और पंडितों और ज्ञानियों को मारने की आज्ञा नहीं। तुमको कोई बाग़ और दरख़्त काटने की आज्ञा नहीं। तुम को कोई इमारत गिराने की या उसे आग लगाने की आज्ञा नहीं और यदि कभी इन हिदायतों को तोड़ा गया तो

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सख़्त नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

" सांसारिक हुकूमतें जब किसी देश में दाख़िल होती हैं तो अंधा धुंद अत्याचार शुरू कर देती हैं केवल इस लिए कि हुकूमत का रोब क़ायम हो जाए। परन्तु इस्लाम इस की आज्ञा नहीं देता। इसी तरह रसूले करीम सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब विजित इलाक़ों में जाओ तो ऐसे आदेश जारी करो जिनसे लोगों को आसानी हो तकलीफ़ न हो। और फ़रमाया जब लश्कर सड़कों पर चलें तो इस तरह चले कि आम मुसाफ़िरों का रास्ता न रुके। एक सहाबी रज़ि कहते हैं एक बार लश्कर इस तरह निकला कि लोगों के लिए अपने घरों से निकलना और रास्ता चलना मुश्किल हो गया इस पर आपने मुनादी करवाई कि जिसने मकानों को बंद किया या रास्ता रोका उस का जिहाद जिहाद नही रहेगा।

अत: इस्लाम कहता है कि तुमको जंग में औरतों के मारने की आज्ञा नहीं तुमको बच्चों के मारने की आज्ञा नहीं। तुमको बूढ़ों के मारने की आज्ञा नहीं। तुमको वादा तोड़ने की आज्ञा नहीं। तुम को धोखा देने की आज्ञा नहीं। तुम को कत्ल हुए लोगों के नाक कान काटने की आज्ञा नहीं।

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-25)

फ़ैमली मुलाक़ातें, एक बरकत वाला ख़्वाब ,आमीन का आयोजन महदी आबाद रवांगी

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

23 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक बुधवार)

फ़ैमिली मुलाक़ातें

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सैशन में 41 फ़ैमिलीज़ के 145 लोगों ने सामूहिक और 11 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मुलाक़ात करने वाली इन सभी फ़ैमलीज़ और लोगों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया। हज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमलीज़ जर्मनी की विभिन्न 18 जमाअतों से आई थीं। कई जमाअतों से मुलाक़ात के लिए आने वाली फ़ैमिलीज़ बड़े लंबे सफ़र तय करके आई थीं।

ओसना बुरोक से आने वाली 420 किलोमीटर, फ्रैंकफ़र्ट से आने वाली 550 किलोमीटर, Bocholt और Dietzenbach से आने वाले 560 किलोमीटर और वेज़ बादिन से आने वाले 570 किलोमीटर की दूरी तय कर के आए थे।

Pfungstadt से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ 580 किलोमीटर, Badkrenznac से आने वाले 600 किलोमीटर और Mannheim से वाली फ़ैमिलीज़ 625 किलोमीटर का दूरी तय करके अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। आज मुलाक़ात करने वालों में कई अरब मर्द और फ़ैमिलीज़ भी थीं।

आज मुलाक़ात करने वालों में एक गेम्बिया के अहमदी दोस्त Ahmadou Njie साहिब ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। महोदय ने मुलाक़ात के बाद बताया। मैंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के बारे में 20 साल पहले एक ख़्वाब देखा था। मैंने जब यह ख़्वाब अपनी माता को सुनाया तो उन्होंने कहा कि जब तक मैं हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात न कर लूं उस समय तक यह ख़्वाब किसी को न सुनाना। इसलिए मैंने वह ख़ाब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात से पहले किसी को नहीं सुनाया।

एक बाबरकत ख़्वाब

अत: आज मुलाक़ात के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को यह ख़्वाब बताया है। अब मुझे लग रहा है जैसे मेरे लिए दरवाज़े खुल गए हैं और मैं बहुत ख़ुश हूँ। हुज़ूर को टीवी पर देखने और इस तरह आमने सामने देखने करने में बहुत अन्तर है।

इस दोस्त ने ख़्वाब का ज़िक्र करते हुए बताया। मैंने देखा था कि मैं पानी में हूँ और वहां पर लाखों फ़रिश्ते भी खड़े हैं। मैं फ़रिश्तों से पूछता हूँ कि आप यहां क्या कर रहे हैं। इस पर फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि तुमने आसमान पर नहीं देखा? जब मैं आसमान पर देखता हूँ तो वहां एक व्यक्ति बैठा हुआ है और मैं उन फ़रिश्तों से पूछता हूँ कि यह व्यक्ति कौन है? और ख़ुद ही उनसे कहता हूँ कि क्या यह ठीक है कि यह व्यक्ति रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की और आप के आदर्श को स्पष्ट करने आया है। इस पर फ़रिश्ते हां में जवाब देते हैं।

इस पर मैं फ़रिश्तों से कहता हूँ कि मैं उस व्यक्ति तक पहुंचने की कोशिश करूँगा। इस पर फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि बहुत से लोग इस व्यक्ति तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं परन्तु वहां तक पहुंच नहीं पाते। इस पर मैं इन फ़रिश्तों से कहता हूँ कि मैं इंशा अल्लाह पहुंच जाऊँगा। फिर मैं वहां से चला जाता हूँ और हुज़ूर अनवर की तरफ़ आसमान पर देखता हूँ और अपना हाथ हुज़ूर अनवर की तरफ़ बढ़ाता हूँ और कहता हूँ कि यह लोग कह रहे हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को स्पष्ट करने के लिए आए हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ हां में जवाब देते हैं। मैं हुज़ूर अनवर से कहता हूँ कि यही कारण है कि मैं ऊपर आपसे मिलने के लिए आया हूँ ताकि आपकी सेवा में सलाम निवेदन कर सकूं और आपकी बरकअत लेकर वापस जा सकूं। इस पर हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं कि ठीक है। इसके बाद में हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाता हूँ और हुज़ूर मुझे एक लिफ़ाफ़ा देते हैं जो मैं अपनी जेब में डाल लेता हूँ और वापस नीचे आकर लोगों को बताता हूँ कि मैं तो इस महान व्यक्ति से मिल आया हूँ। उन्होंने मेरे लिए दुआ की है और मुझे बरकतों से नवाज़ा है और मैं यह बरकतें अपने घर लेकर जा रहा हूँ। जब मैं नीचे आता हूँ तो वहां एक हैलिकाप्टर भी उड़ रहा होता है। मैं लोगों से पूछता हूँ कि यहां हैलिकाप्टर क्यों आया हुआ है? फिर ख़्वाब में ही में हैलिकाप्टर के अंदर जाता हूँ जो कि एक मस्जिद के ऊपर उड़ता है और वह मस्जिद "मस्जिद ख़दीजा" की तरह नज़र आती है। फिर जब मैं मस्जिद पहुंचता हूँ तो वह लिफ़ाफ़ा खोलता हूं जिसमें बरकतें होती हैं और मैं वे बरकतें अपनी फ़ैमिली में बांट देता हूँ।

महोदय वर्णन करते हैं। पिछले साल मैं जलसा सालाना में शरीक हुआ था और वहां हैलिकाप्टर भी उड़ रहा था। और फिर हुज़ूर अनवर जब झण्डा लहरा रहे थे तो हज़ारों लोग वहां खड़े नारे ऊंचा कर रहे थे। जब नमाज़ों के बाद में सोया तो मुझे वही ख़्वाब दोबारा आई और एक आदमी मुझे कहता है कि तुम्हें अपनी ख़्वाब याद है जिसमें तुमने एक महान हस्ती को देखा था। जिस व्यक्ति ने आज झंडा ऊंचा किया था यह वही हस्ती है जिसे तुमने ख़्वाब में देखा था। इसके बाद जब मैंने हुज़ूर अनवर को पहली बार देखा तो मैं रोने लग गया। मैं जलसा गाह में गेस्ट वाले हिस्सा में मौजूद था जहां हुज़ूर बड़ी क़रीब से गुज़रे। मेरी ज़िन्दगी में पहली बार हुज़ूर अनवर मेरे इतने निकट थे। मुझे ऐसे लग रहा था जैसे किसी ने मेरे जिस्म पर बहुत गर्म पानी डाल दिया है। और मैं इसके बाद एक घंटा तक रोता रहा।

पहले तो मैंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को निकट से ही देखा था और आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मुझे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मस्जिद ख़दीजा बर्लिन में मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुई और इसी मस्जिद को मैंने ख़्वाब में देखा था।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 1 बजकर 40 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद स्थानीय मज्लिस आमला जमाअत बर्लिन और सैक्योरिटी टीम ख़ुद्दामुल अहमदिया ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

आमीन का आयोजन

2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद ख़दीजा में तशरीफ़ लाए और प्रोग्राम के अनुसार आमीन का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 24 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और अन्त में दुआ करवाई।

प्रिय अर्सल इमरान शाहिद, बिलाल अहमद, सरफ़राज़ अहमद, नूरुद्दीन क़ासिम, मुहसिन ज़ाएद, माहिर चीमा, जाज़िब अता, अरीज़ अहमद, फ़र्साद महमूद, ख़ाक़ान आरिफ़, अदनान महमूद मलिक, मसरूर अहमद मलिक, हारिस वलीद अहमद और बासिल इमरान, प्रिया युसरा मन्नान, ज़ारा मन्सूर, रोहा उम्र, हिबा नासिर, सबाहा मुनीर, अनायह अहमद, ताबीना मसरूर, कश्माला सेहर, मुसर्रत शाकिर और आयान ख़ान।

आमीन के आयोजन बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

महदी आबाद रवांगी

आज प्रोग्राम के अनुसार बर्लिन से महदी आबाद (हिमबर्ग) के लिए रवानगी थी।

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

क्या ख़ुश-क़िस्मत हैं ये लोग जो दुनिया में भी अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले थे और अगले संसार में भी उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने वाले हैं।

अमीनुल उम्मत, अश्रा मुबश्शिरा की बिशारत वाले, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी

हज़रत अब्बू उबैदह बिन जर्राह रज़ि अल्लाहो अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन

तीन मरहूमीन प्रोफ़ेसर डाक्टर नईमुद्दीन खटक साहिब शहीद आफ़ पेशावर, प्रिय उसामा सादिक़ पुत्र मुहम्मद सादिक़ साहिब छात्र जामिया जर्मनी और

आदरणीय सलीम अहमद मलिक साहिब उस्ताद जामिआ अहमदिया यूके का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 9 अक्तूबर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बा में हज़रत अब्बू उबैदह रज़ि का ज़िक्र हो रहा था आज भी इस का बाक़ी हिस्सा बयान होगा।

जंग यरमूक जो जंग थी वह यरमूक जो शाम के आस पास के इलाक़े में एक वादी का नाम है इस के नाम के कारण से यह यरमूक थी। 15 हिज्री में शाम में सबसे बड़ा युद्ध यरमूक की वादी में दरिया यरमूक के किनारे हुआ। रोमी लोग बाहान के नेतृत्व में अढ़ाई लाख के लगभग जंग करने वाले मैदान में लाए जबकि मुसलमानों की संख्या तीस हज़ार के लगभग थी जिनमें एक हज़ार सहाबा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे और उनमें एक सौ के लगभग बदरी सहाबा थे।

परामर्श के बाद मुसलमानों ने अस्थायी तौर पर हिमस में से अपनी फ़ौजों को वापस बुलाया और वहां के ईसाइयों से कहा कि चूँकि हम अस्थायी तौर पर तुम्हारी हिफ़ाज़त से हाथ खींच रहे हैं अत: तुम्हारा जिज़्या तुम्हें वापस किया जाता है। जो टैक्स उनसे लिया जाता था वापस किया जाता है क्योंकि जिस मक़सद के लिए यह जिज़्या लिया जा रहा है वह तुम्हारे काम हम नहीं कर सकते। अत: हिमस वालों को उनका जिज़्या वापस किया गया। यह रक़म कई लाख की थी। जब यह रक़म उन्हें वापस की गई तो ईसाई मुसलमानों की हक़ीक़त पसन्दी और इन्साफ़ के कारण से रोते थे और घरों की छतों पर चढ़ कर दुआएं करते थे कि हे रहमदिल मुसलमान शासको ! ख़ुदा तुम्हें फिर वापस लाए। मुसलमानों के हिमस से पीछे हटने के कारण से रोमियों की हिम्मत और भी बढ़ गई और वह एक बड़े लश्कर के साथ यरमूक पहुंच कर मुसलमानों के मुक़ाबले पर ख़ेमा डाल कर खड़े हो गए लेकिन दिल में वे मुसलमानों के ईमानी जोश से भयभीत भी थे इसलिए सुलह की भी आशा करते थे, कोशिश कर रहे थे कि सुलह भी हो जाए। रोमियों के सिपहसालार बहान ने जॉर्ज नामी रोमी दूत को इस्लामी लश्कर की तरफ़ भेजा। जब वह इस्लामी लश्कर में पहुंचा तो मुसलमान मग़रिब की नमाज़ अदा कर रहे थे। उसने मुसलमानों को विनय तथा विनम्रता से और ख़ुदा के सामने सिज्दा करते हुए देखा तो बहुत प्रभावित हुआ। उसने हज़रत अबू उबैदह रज़ि से कुछ प्रश्न किए जिनमें से एक ये था कि हज़रत ईसा के बारे में आपका क्या ख़्याल है। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने क़ुरआन करीम की यह आयत पढ़ी कि

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَ لَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَ كَلِمَتُهٗ اَلْقٰىهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَ رُوْحٌ مِّنْهُ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ لَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا

(अन्निसा:172) कि हे अहले किताब अपने धर्म में सीमा का उल्लंघन न करो। अल्लाह के बारे में हक़ के सिवा कुछ न कहो। अवश्य मसीह ईसा इब्ने मर्यम केवल अल्लाह का रसूल है और इस का कलिमा है जो उसने मर्यम की तरफ़ उतारा और उस की तरफ़ से एक रूह है। अत: अल्लाह पर और उस के रसूलों पर ईमान ले आओ और तीन मत कहो। रुक जाओ कि इस में तुम्हारी भलाई है। अवश्य अल्लाह ही एक उपास्य है। वह पवित्र है इस से कि इस का कोई बेटा हो। उसी का है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है और बहैसीयत काम बनाने वाला अल्लाह काफी है।

फिर उस के बाद अगली आयत पढ़ी।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ

(अन्निसा 173) मसीह हरगिज़ इस बात को बुरा नहीं मनाएगा कि वह अल्लाह का एक बंदा माना जाए और न ही सानिध्य प्राप्त फ़रिश्ते इसे बुरा मनाएंगे

जॉर्ज ने जब क़ुरआन करीम की इस शिक्षा को सुना तो पुकार उठा कि बेशक मसीह के यही गुण हैं और कहा कि तुम्हारा पैग़म्बर सच्चा है और मुसलमान हो गया। जो प्रतिनिधि बन के आया था अब वह अपने लश्कर में वापस नहीं जाना चाहता था लेकिन हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने फ़रमाया कि रोमियों को वादा तोड़ने की शंका होगी इसलिए तुम वापस जाओ और फ़रमाया कि कल जो दूत यहां से जाएगा उस के साथ आ जाना। ईसाई लश्कर को हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने इस्लाम की दावत दी और इस्लामी बराबरी, भाईचारा और इस्लामी आचरण को उनके सामने पेश किया। अगले दिन हज़रत ख़ालिद रज़ि उनकी तरफ़ गए परन्तु नतीजा निराशाजनक रहा और जंग की तैयारी शुरू हो गई। लश्कर के पीछे मुसलमान औरतें थीं जो जंग में लश्करियों को पानी पिलातें, ज़ख़्मियों की देख-भाल करतीं और ग़ाज़ियों को जोश दिलाती थीं। इन औरतों में हज़रत अस्मा पुत्री अबू बकर रज़ि,हज़रत हिन्द पुत्र उतबहा रज़ि,आप हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि की बीवी थीं और फ़तह मक्का के अवसर पर मुसलमान हुई थीं, हज़रत उम्मे अबान इत्यादि थीं। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने जंग से पहले मुसलमान औरतों को सम्बोधित हो कर फ़रमाया कि मुजाहिदात! ख़ेमों की चौबें उखाड़ कर हाथों में ले लूं। पत्थरों से अपनी झोलियाँ भर लू और मुसलमानों को जंग का प्रोत्साहन दो। उनको कहो आज तुम्हारा मुक़ाबला है और तुमने पीठ नहीं दिखानी। अगर सफल होता देखो तो अपनी जगह पर ही बैठी रहना। अगर देखो कि मुसलमान पीछे हट रहे हैं तो उनके मुंहों पर चौबें मारना और पत्थर बरसा कर उन्हें मैदाने जंग में वापस भेजना और अपने बच्चे ऊपर उठाना और उनसे कहना कि जाओ और अपने घरवालों और इस्लाम के लिए जानें दो। इस के बाद आप मर्दों से यूं सम्बोधित हुए। अल्लाह के बंदो! ख़ुदा की मदद के लिए आगे बढ़ो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को दृढ़ता प्रदान करेगा। हे अल्लाह के बंदो सब्र करो कि सब्र ही कुफ़्र से नजात का माध्यम, ख़ुदा को राज़ी करने का कारण और बदनामी को धोने वाला है। अपनी सफ़ों को मत तोड़ना, लड़ाई का आरम्भ तुम न करना, भालों को तान लो, ढालों को सँभाल लो और ज़बानों को ख़ुदा के ज़िक्र से व्यस्त रखो ताकि ख़ुदा अपनी इच्छा को पूरा करे। लड़ाई का आरम्भ नहीं करना लेकिन जब जंग, हमला हो जाए तो फिर पीठ नहीं दिखानी।

दुश्मनों के लश्कर के आगे उस वक़्त सोने की सलीब थी और उनके हथियारों की चमक आँखों में चकाचौंध पैदा कर रही थी। दूसरे वे सिर से ले के पैर तक लोहे में डूबे हुए थे अर्थात ज़िरहें पहनी हुई थीं। उन्होंने उस दिन अपने पैरों में बेड़ियाँ भी पहन ली थीं कि हम मैदाने जंग से भागेंगे नहीं। या मार देंगे या मर जाऐंगे। पादरी इंजील के उद्धरणों को पढ़ कर उन्हें जोश दिला रहे थे। कुफ़्फ़ार का लश्कर समुन्द्र की लहरों की तरह आगे बढ़ा। दो अढ़ाई लाख की फ़ौज थी। यह सिर्फ़ तीस हज़ार थे। और जंग शुरू हुई। आरम्भ में रोमियों का पलड़ा भारी रहा और उन्होंने मुसलमानों को धकेलना शुरू किया।

ईसाइयों ने चुपके चुपके यह पता करा लिया था कि मुसलमानों में सहाबी कौन कौन से हैं और फिर उन्होंने अपने कुछ तीर-अंदाज़ एक टीले पर बिठा दिए और उन्हें हिदायत कर दी कि वे अपने तीरों से विशेष रूप से सहाबा को निशाना बनाएँ। वे जानते थे कि जब बड़े बड़े लोग मारे गए तो बाक़ी फ़ौज के दिल अपने आप टूट जाऐंगे और वे मैदान से भाग जाऐंगे। परणिाम यह हुआ कि कई सहाबा मारे भी गए और कुछ की आँखें भी नष्ट हो गईं। यह हालत देखी तो इकरमा, अबुजहल के बेटे जो फ़तह मक्का के वक़्त मुसलमान हो गए थे, जिन्हों ने फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह निवेदन किया था कि दुआ कीजिए कि अल्लाह मुझे तलाफ़ी माफ़ात अर्थात पहले गुज़री हुए घटनाओं की माफी की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। वह अपने कुछ साथियों को साथ लेकर हज़रत अबू उबैदह रज़ि की सेवा में हाज़िर हुए और उन्होंने निवेदन किया कि सहाबा बहुत बड़ी सेवाएं कर चुके हैं। अब हम जो बाद में आए हैं हमें सवाब प्राप्त करने का अवसर दिया जाये। हम लश्कर के दिल में अर्थात मध्य वाले हिस्सा में हमला करेंगे और ईसाई जरनेलों को मार डालेंगे। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने फ़रमाया कि यह बड़े ख़तरे की बात है। इस तरह तो जितने नौजवान जाऐंगे वे सब मारे जाऐंगे। अकरमा रज़ि ने कहा कि यह ठीक है परन्तु इस के अतिरिक्त कोई उपाय भी नहीं है। क्या आप यह पसन्द करते हैं कि हम नौजवान बच जाएं और सहाबा मारे जाएं। अब मुसलमान हुए तो एक ईमानी जोश था। अल्लाह तआला के लिए जान क़ुर्बान करने की एक तड़प थी। अकरमा रज़ि ने बार-बार यह आज्ञा चाही कि वह चार-सौ सिपाहियों के साथ दुश्मन के लश्कर के मर्कज़ी हिस्सा पर हमला करें। आख़िर हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने उनके बार बार कहने पर उन्हें इजाज़त दे दी। इस पर उन्होंने लश्कर के मर्कज़ी हिस्से पर हमला किया और उसे शिकस्त दे दी लेकिन इस लड़ाई में उनमें से अक्सर नौजवान शहीद हो गए और मुसलमान रोमियों को उनकी ख़ंदक़ों की तरफ़ धकेलते हुए ले गए जो इन रोमियों ने अपने पीछे बनाई हुई थीं। चूँकि उन्होंने अपने आपको ज़ंजीरों से बाँधा भी हुआ था ताकि कोई दौड़ न सके इसलिए वे एक के बाद दूसरा इन ख़ंदक़ों में गिरते गए। एक गिरता था तो दस और भी ले के साथ ही गिरता था। अस्सी हज़ार कुफ़्फ़ार पीछे हटते हुए दरिया यरमूक में डूब कर मर गए। एक लाख रोमियों को मुसलमानों ने मैदाने जंग में क़तल किया। मुसलमान तीन हज़ार के लगभग शहीद हुए थे। यह थी यरमूक।

(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब, भाग 2 पृष्ठ 21 से 25) (उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 10 पृष्ठ 181)(मुअज्जमुल बुलदान ,भाग 5 पृष्ठ 497 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि खासतौर पर उस के ख़ात्मा के समय के बारे में कुछ बयान फ़रमाते हैं कि जब जंग ख़त्म हुई तो मुसलमानों ने विशेष रूप से अकरमा रज़ि और उनके साथियों को तलाश किया तो क्या देखा कि इन आदमियों में से बारह बहुत ज़ख़्मी हैं। उनमें एक अक़रमा भी थे। एक मुसलमान सिपाही उनके पास आया और अक़रमा की हालत देखी, बड़ी ख़राब थी। उसने कहा अक़रमा! मेरे पास पानी की छागल है तुम कुछ पानी पी लो। अकरमा रज़ि ने मुँह फेर कर देखा तो पास ही हज़रत अब्बास रज़ि के बेटे हज़रत फ़ज़ल रज़ि ज़ख़्मी हालत में पड़े हुए थे। अक़रमा रज़ि ने इस मुसलमान से कहा कि मेरी ग़ैरत यह सहन नहीं कर सकती कि जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उस वक़्त मदद की जब मैं आप का बहुत विरोधी था वह और उनकी औलाद तो प्यास की कारण से मर जाए और मैं पानी पी कर ज़िन्दा रहूं। एक दूसरे के लिए क़ुर्बानी की एक नई भावना पैदा हुई थी। इसलिए पहले उन्हें अर्थात हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ि को पानी पिला लो। अगर कुछ बच जाए तो फिर मेरे पास ले आना। वह मुसलमान हज़रत फ़ज़ल रज़ि के पास गया। उन्होंने अगले ज़ख़्मी की तरफ़ इशारा किया और कहा कि पहले उसे पानी पिलाओ वह मुझसे अधिक अधिकारी है। वह उस ज़ख़्मी के पास गया तो उसने अगले ज़ख़्मी की तरफ़ इशारा कर के कहा कि वह मुझसे अधिक ज़रूरत वाला है पहले उसे पिलाओ पानी। इस तरह वह जिस सिपाही के पास जाता वह उसे दूसरे के पास भेज देता और कोई न पीता जब वो आख़िरी ज़ख़्मी के पास पहुंचा तो वह फ़ौत हो चुका था। वह वापस दूसरे की तरफ़ आया यहां तक कि अक़रमा तक पहुंचा परन्तु वे सब फ़ौत हो गए थे।

(उद्धरित अज़हर हर अहमदी औरत अहमदियत की सच्चाई का एक ज़िन्दा निशान है, अनवारुल उलूम, भाग 26 पृष्ठ 230-231)

सीरिया के लोग विभिन्न धर्मों के अनुयायी थे। ज़बानों का मतभेद था। उनकी नस्लें विभिन्न थीं। हज़रत अबू उबैदह रज़ि बिन जर्राह ने उनमें न्याय तथा बराबरी क़ायम की। भीतरी अमन तथा शान्ति स्थापित की। हर एक को धार्मिक आज़ादी दी और इस इस्लामी रूह को जारी किया कि समस्त लोग हज़रत आदम की औलाद हैं और सब भाई-भाई हैं और उनमें इन्सान होने की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं अर्थात कई बार यह भी ग़लत इल्ज़ाम लगाया जाता है कि ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया। आप ने इन रोमियों को धार्मिक आज़ादी दी। क़बीलों की पहचान करवाई। अमन सुकून क़ायम फ़रमाया। धार्मिक आज़ादी क़ायम फ़रमाई। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ही की कोशिशों से जो अरब लोग शाम में आबाद थे और ईसाई मज़हब के अनुयायी थे इस्लाम की आग़ोश में आ गए। तब्लीग़ से आए, ताक़त से नहीं आए। या इसके इलावा मुसलमानों का आचरण देख के आए जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है। इसके इलावा रूमी और ईसाई भी आपके आचरण से प्रभावित हो कर इस्लाम ले आए। यरमूक की फ़तह से कुछ दिन पहले हज़रत अबू बकर रज़ि का देहान्त हो गया, आप का देहान्त हो गई और हज़रत उमर रज़ि ख़लीफ़ा चुने गए। हज़रत उम्र रज़ि ने शाम की निगरानी और फ़ौजों की क़ियादत हज़रत अबू उबैदह रज़ि के सपुर्द की। जब हज़रत अबू उबैदह रज़ि को हज़रत उम्र रज़ि की इस तक़रीर का ख़त पहुंचा तो उस वक़्त जंग पूरे ज़ोरों पर थी इसलिए हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने इस का इज़हार न किया और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि को जब इस का इल्म हुआ क्योंकि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि उस वक़्त कमांडर थे तो उन्होंने पूछा कि आपने इस को क्यों छुपाए रखा। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने फ़रमाया इसलिए कि हम दुश्मन के मुक़ाबला में थे और में किसी तरह आपकी दिल-शिकनी नहीं चाहता था। जब मुसलमानों को फ़तह हुई तो हज़रत ख़ालिद का लश्कर इराक़ वापस जाने लगा तो हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने हज़रत ख़ालिद रज़ि को कुछ देर अपने पास रोके रखा। जब हज़रत ख़ालिद रज़ि रवाना होने लगे तो उन्होंने लोगों से सम्बोधित हो कर फ़रमाया कि तुम्हें ख़ुश होना चाहिए कि इस उम्मत के अमीन तुम्हारे वाली हैं अर्थात हज़रत अबू उबैदह रज़ि। इस पर अबू उबैदह रज़ि ने फ़रमाया मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि ख़ालिद बिन वलीद ख़ुदा की तलवारों में से एक तलवार है। अत: इस तरह मुहब्बत और सम्मान के साथ ये दोनों क़ायद एक दूसरे से अलग हुए।

(उद्धरित अज़ रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब, भाग 2 पृष्ठ 26-27)

यह है मोमिन का तक़्वा कि न नाम की इच्छा, न दिखावा की ख़्वाहिश, न किसी अफ़्सरी और ओहदे की इच्छा। उद्देश्य है तो सिर्फ एक कि ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त की जाए और ख़ुदा तआला की बादशाहत दुनिया में क़ायम की जाए। अत: ये लोग जो हैं ये हमारे लिए उत्तम आदर्श हैं। और हर ओहदेदार को अपितु हर अहमदी को इन बातों को अपने सामने रखना चाहिए।

फ़तह बैयतुल-मुक़द्दस की घटना वर्णन हुई है। इस का भी सम्बन्ध हज़रत अबू उबैदह रज़ि के साथ है। हज़रत अमरो बिन आस रज़ि के नेतृत्व में इस्लामी लश्कर फ़िलस्तीन की तरफ़ बढ़ा। उन्होंने जब फ़िलस्तीन के शहरों को फ़तह कर के बैयतुल-मुक़द्दस का घेराव कर लिया तो हज़रत अबू उबैदह रज़ि का लश्कर भी उनसे आन मिला। ईसाइयों ने क़िला बन्दी से तंग आकर सुलह की पेशकश की लेकिन शर्त यह रखी कि ख़ुद हज़रत उम्र रज़ि आकर सुलह का मुआहिदा करें। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने ईसाईयों की इस पेशकश को हज़रत उमर रज़ि तक पहुंचाया, हज़रत उमर रज़ि को इस की सूचना दी। हज़रत उमर रज़ि हज़रत अली रज़ि को अपने पीछे अमीर निर्धारित फ़र्मा कर रबी उलअव्वल 16 हिज्री को मदीना से रवाना हो कर जाबिया स्थान पर जो दमिशक़ के देहातों में एक बस्ती है वहां पहुंचे जहां क़ायदीन ने आपका स्वागत किया, वहां क़ायदीन मौजूद थे। आपने फ़रमाया कि मेरा भाई कहाँ है? लोगों ने पूछा हे अमीरुल मोमनीन रज़ि! आप की मुराद कौन है? आप ने फ़रमाया अबू उबैदह रज़ि। निवेदन किया गया कि अभी आते हैं। इतने में हज़रत अबू उबैदह रज़ि ऊंटनी पर सवार हो कर आए और सलाम निवेदन कर के ख़ैरीयत पूछी। हज़रत उम्र रज़ि ने बाक़ी सब लोगों को जाने के लिए कहा और ख़ुद हज़रत अबू उबैदह रज़ि के साथ उनके निवास पर तशरीफ़ लाए। घर पहुंच कर देखा कि वहां सिर्फ एक तलवार, ढाल, चटाई और एक प्याले के सिवा कुछ न था। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया अबू उबैदह रज़ि !कुछ सामान भी मुहय्या कर लेते। घर में कुछ तो सामान रखना चाहिए। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने निवेदन किया की हे अमीरुल मोमनीन ये हमें सुविधाओं की तरफ़ माइल कर देगा। यद्यपि मैं सामान तो उपलब्ध कर सकता हूँ परन्तु फिर सुविधाओं और आरामों को देखकर इन्ही चीज़ों में पड़ जाऊँगा। इसलिए मैं नहीं चाहता कि ऐसी चीज़ें रखूं। इस अवसर पर हज़रत बिलाल रज़ि की अज़ान की एक ईमान वर्धक घटना भी पेश आई। पहले भी बयान

हो चुका है। हज़रत बिलाल रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद अज़ान न देते थे। इस अवसर पर एक बार नमाज़ का वक़्त हुआ तो लोगों ने हज़रत उम्र रज़ि से बार बार कहा कि वह हज़रत बिलाल रज़ि को अज़ान देने का हुक्म दें। हज़रत उम्र रज़ि के हुक्म पर हज़रत बिलाल रज़ि ने जब अज़ान दी तो सब आँखें आंसू बहाने लगीं। लोगों की आँखों में आँसू आ गए और लोगों में सबसे ज़्यादा हज़रत उमर रज़ि रोए क्योंकि इस अज़ान ने उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना याद करा दिया।

(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी साहिब, भाग 2 पृष्ठ 28 से 30) (मुअज्जमुल बुलदान, भाग 2 सफ़ा 106 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

रोमियों की आख़िरी कोशिश के बारे में लिखा है कि 17 हिज्री में रोमियों ने मुसलमानों से शाम वापस लेने के लिए एक आख़िरी कोशिश की और उत्तरी शाम, अल-जज़ीरा, उत्तरी इराक़ और आरमीनिया के कुर्दों, बद्दूओं, ईसाईयों और ईरानियों ने हरक़्ल से अपील की कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ उनकी मदद की जाए। उन्होंने अपनी तरफ़ से तीस हज़ार के लश्कर की पेशकश की। यद्यपि कि उस वक़्त तक अल-जज़ीरा का अधिकतर हिस्सा हज़रत साद बिन अबी वकास रज़ि ने फ़तह कर लिया था परन्तु वहां के बद्दूओं पर अभी तक उनका क़ब्ज़ा नहीं हुआ था और केसर रुम की बाहरी ताक़त अभी बरक़रार थी। उसने अवसर को ग़नीमत जाना और एक बड़ी समुद्री फ़ौज के साथ हमला कर दिया जबकि बद्दू क़बीले के एक बड़े लश्कर ने हिम्स का घैराव कर लिया और उत्तरी शाम के कुछ शहरों ने बग़ावत कर दी। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने हज़रत उम्र रज़ि को सहायता के लिए लिखा। हज़रत उम्र रज़ि ने हज़रत साद बिन अबी वकास रज़ि को फ़ौरन कूफ़ा से इमदादी फ़ौज भेजने का इरशाद फ़रमाया। अत: हज़रत सअद रज़ि ने कअकअ बिन अमरो की नेतृत्व में एक फ़ौज कूफ़ा से रवाना की परन्तु उस के बावजूद रूमी लश्कर और मुसलमानों के लश्कर की संख्या में बहुत अधिक अन्तर था। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने लश्कर के सिपाहियों से एक जोशीला ख़िताब किया और फ़रमाया मुसलमानो !आज जो दृढ़ता से रह गया और अगर ज़िन्दा बचा तो देश तथा माल उस को मिलेगा और अगर मारा गया तो शहादत की दौलत मिलेगी और मैं गवाही देता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख़्स इस हाल में मरे कि वह मुशरिक न हो तो वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा। दोनों गिरोहों में जंग हुई तो मुसलमानों के मुक़ाबले में थोड़ी ही देर में रोमियों के पैर उखड़ गए और वे मर्जुद्दीबाज़ जो शाम के सरहदी इलाक़े पर एक शहर मस्सीसह है इस से दस मील की दूरी पर एक पहाड़ी वादी का नाम है वहां तक भागते चले गए और इस के बाद कभी क़ैसर को शाम की तरफ़ हमला करने का हौसला न हुआ।

(अशरा मुबश्शिरा लेखक साजिद, पृष्ठ 816-817 अलबदर पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार लाहौर, 2000 ई)(सैरुस्सहाबा लेखख शाह मुईनुद्दीन नदवी,भाग 2 पृष्ठ 131 दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची पाकिस्तान (मुअज्जमुल बुलदान, भाग 5 पृष्ठ 118 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

ताऊन अमवास: यह भी एक जगह है जो रमला से बैतुल-मुक़द्दस के रास्ते पर छ: मील की दूरी पर एक वादी है। तारीख़ की पुस्तकों में लिखा है कि उसे ताऊन अमवास इसलिए कहा जाता है कि यहां से इस बीमारी का आरम्भ हुआ था। इस बीमारी से शाम में असंख्य मौतें हुईं। कुछ के निकट इस से पच्चीस हज़ार के लगभग मौतें हुईं। इस का विस्तार बुख़ारी की एक रिवायत में मिलती है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि बयान करते हैं कि जब हज़रत उम्र सर्ग़ स्थान अर्थात सर्ग़ वह स्थान है जो शाम और हिजाज़ के सरहदी इलाक़े में वादी तबूक की एक बस्ती है जो मदीने से तेरह रातों की दूरी पर है। पुरानी तारीख़ों में इस तरह ही लिखा होता था। इस का मतलब कोई हज़ार मील के लगभग होगा, वहां पहुंचे तो आप की मुलाक़ात फ़ौजों के उमरा हज़रत अबू उबैदह रज़ि और उनके साथियों से हुई। इन लोगों ने हज़रत उम्र रज़ि को बताया कि शाम के मुल्क में ताऊन की महामारी फूट पड़ी है। हज़रत उम्र रज़ि ने अपने पास मश्वरे के लिए अव्वलीन मुहाजरीन को बुलाया। हज़रत उमर रज़ि ने उनसे मश्वरा किया परन्तु मुहाजिरीन में राय का मतभेद हो गया। कुछ का कहना था कि यहां से पीछे नहीं हटना चाहिए जबकि कुछ ने कहा कि इस लश्कर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम शामिल हैं और उनको इस महामारी में डालना उचित नहीं। हज़रत उम्र रज़ि ने मुहाजरीन को वापस भिजवा दिया और अन्सार को बुलाया और उनसे मश्वरा लिया परन्तु अन्सार की राय में भी मुहाजिरीन की तरह मतभेद हो गया। हज़रत उमर रज़ि ने अन्सार को भिजवाया और फिर फ़रमाया कि क़ुरैश के बूढ़े लोगों को बुलाओ जो फ़तह मक्का के वक़्त इस्लाम क़बूल कर के मदीना आए थे। उनको बुलाया गया। उन्होंने एक ज़बान हो कर मश्वरा दिया कि इन लोगों को साथ लेकर वापस लौट चलें और महामारी के इलाक़े में लोगों को न ले के जाएं। हज़रत उम्र रज़ि ने उन लोगों में वापसी का ऐलान करवा दिया। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने इस अवसर पर सवाल किया कि अल्लाह की तक़दीर से फ़रार संभव है? हज़रत उम्र रज़ि ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि से फ़रमाया अबू उबैदह रज़ि! काश तुम्हारे इलावा किसी और ने यह बात कही होती। हाँ हम अल्लाह की तक़दीर से फ़रार होते हुए अल्लाह ही की तक़दीर की तरफ़ जाते हैं। क्योंकि एक तक़दीर से दूर जा रहे हैं लेकिन दूसरी तक़दीर भी अल्लाह की है इस तरफ़ जा रहे हैं। फ़रमाया कि अगर तुम्हारे पास ऊंट हूँ और तुम उनको लेकर ऐसी वादी में उतरो जिसके दो किनारे हूँ। एक हरी भरी हो और दूसरा ख़ुशक हो तो क्या ऐसा नहीं है कि अगर तुम अपने ऊंटों को हरे भरे जगह पर चराओ तो वह अल्लाह की तक़दीर से है और अगर तुम उनको ख़ुशक जगह पर चराओ तो वह भी अल्लाह की तक़दीर से है। रावी कहते हैं कि इतने में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि भी आ गए जो पहले अपनी किसी व्यस्तता के कारण से हाज़िर नहीं हो सके थे। उन्होंने निवेदन किया कि मेरे पास इस मसले का इल्म है। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने कहा मैं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह सुना है कि जब तुम किसी जगह के बारे में सुनो कि वहां कोई महामारी फूट पड़ी है तो वहां मत जाओ और अगर कोई बीमारी किसी ऐसी जगह पर फूट पड़े जहां तुम रहते हो तो वहां से फ़रार होते हुए बाहर भी मत निकलो। इस पर हज़रत उमर रज़ि ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और वापस लौट गए।

(सही अल-बुख़ारी, किताबुतिब्ब, बाब मा युज़िकर फित्ताऊन ,हदीस नम्बर 5729)(मोअज्जमुल बुलदान, भाग 4 पृष्ठ 177-178 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)(मोअज्जमुल बुलदान ,भाग 3 पृष्ठ 239 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

ताऊन अम्वास के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि बयान फ़रमाते हैं कि "हज़रत उम्र रज़ि अल्लाह तआला अन्हो जब शाम तशरीफ़ ले गए और वहां ताऊन पड़ गई जो ताऊन अम्वास के नाम से मशहूर है और हज़रत अबू उबैदह रज़ि और इस्लामी लश्कर ने आपका स्वगात किया तो उस वक़्त सहाबा रज़ि ने मश्वरा दिया कि चूँकि उस वक़्त इलाक़ा में ताऊन की महामारी फैली हुई है इसलिए आपको वापस तशरीफ़ ले जाना चाहिए। हज़रत उमर रज़ि ने उनके मश्वरा को स्वीकार कर के फ़ैसला कर लिया कि आप वापस लौट जाऐंगे। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ज़ाहिर पर बड़ा इसरार करने वाले थे। उन्हें जब इस फ़ैसला का इल्म हुआ तो उन्होंने कहा कि أَتَفِرُّ مِنَ الْقَضَاءِ आप अल्लाह की क़ज़ा से भाग रहे हैं? हज़रत उमर रज़ि ने कहा أَفِرُّ مِنْ قَضَاءِ اللّٰهِ إِلَى قَدَرِ اللّٰهِ मैं अल्लाह तआला की क़ज़ा से उस की क़दर की तरफ़ भाग रहा हूँ। अर्थात अल्लाह तआला का एक ख़ास फ़ैसला है और एक आम फ़ैसला। ये दोनों फ़ैसले उसी के हैं। किसी और के नहीं। अत: मैं इसके फ़ैसला से भाग नहीं रहा बल्कि उस के एक फ़ैसला से उस के दूसरे फ़ैसला की तरफ़ जा रहा हूँ। तारीख़ों में लिखा है कि हज़रत उमर रज़ि को जब ताऊन की ख़बर मिली और आप ने मश्वरा के लिए लोगों को इकट्ठा किया तो आप ने पूछा कि शाम में तो पहले भी ताऊन पड़ा करती है। फिर लोग ऐसे अवसर पर क्या किया करते हैं। उन्होंने बताया कि जब ताऊन फैलती है तो लोग भाग कर इधर उधर चले जाते हैं और ताऊन का ज़ोर टूट जाता है" अर्थात बजाय शहर में रहने के इर्द-गिर्द के इलाक़ों में बाहर खुली जगहों पर चले जाते हैं। "इसी मश्वरा की तरफ़ आप ने इशारा करते हुए फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने एक आम क़ानून भी बनाया हुआ है कि जो शख़्स ताऊन के स्थान से भाग कर इधर उधर खुली हवा में चला जाए वह बच जाता है। अत: जबकि यह क़ानून भी ख़ुदा तआला का ही बनाया हुआ है तो मैं इस के किसी क़ानून को तोड़ नहीं रहा बल्कि उस की क़ज़ा से क़दर की तरफ़ लौट रहा हूँ। अर्थात ख़ुदा तआला के विशेष क़ानून के मुक़ाबला में उस के आम क़ानून की तरफ़ जा रहा हूँ। अत: तुम यह नहीं कह सकते कि मैं भाग रहा हूँ। मैं सिर्फ एक क़ानून से उस के दूसरे क़ानून की तरफ़ जा रहा हूँ।" (तफ़सीर कबीर ,भाग 5 सफ़ा 170-171)

हज़रत उम्र रज़ि मदीना वापस आ गए परन्तु आप को ताऊन के फैलने के कारण से बहुत घबराहट और परेशानी थी। एक दिन हज़रत उम्र रज़ि ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि को ख़त भिजवाया कि मुझे तुमसे एक ज़रूरी काम है इसलिए जब तुम्हें यह ख़त पहुंचे तो फ़ौरन मदीना के लिए रवाना हो जाना। अगर ख़त रात को पहुंचे तो सुबह होने की प्रतीक्षा न करना और अगर ख़त सुबह पहुंचे तो रात होने की प्रतीक्षा न करना। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने जब वह ख़त पढ़ा तो कहने लगे कि मैं अमीरुल

मोमनीन की ज़रूरत को जानता हूँ। अल्लाह हज़रत उम्र पर रहम करे कि वह उसे बाक़ी रखना चाहते हैं जो बाक़ी रहने वाला नहीं है। समझ गए कि क्या घबराहट है? किस कारण से है? फिर इस ख़त का जवाब दिया कि हे अमीरुल मोमिनीन! मैं आप की इच्छा को समझ गया हूँ। मुझे न बुलाइए। यहीं रहने दीजिए। मैं मुसलमान सिपाहियों में से एक हूँ। जो मुक़द्दर है वह हो कर रहेगा। मैं उनसे कैसे मुँह मोड़ सकता हूँ ? हज़रत उम्र रज़ि ने जब वह ख़त पढ़ा तो आप रो पड़े। मुहाजरीन में बैठे हुए थे उन्होंने पूछा हे अमीरुल मोमेनीन ! क्या हज़रत अबू उबैदह रज़ि फ़ौत हो गए। आप ने फ़रमाया नहीं लेकिन शायद हो जाएं।

(सैरुल आलाम अन्नहला, भाग 1 सफ़ा 18-19 अबू उबैदह बिन अलजराह, मुअसस रिसाला बेरूत लबनान, 1996 ई)

फिर हज़रत उम्र रज़ि ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि को लिखा कि मुसलमानों को इस क्षेत्र से निकाल कर किसी सेहत वाले स्थान पर ले जाओ। जब भी कोई मुसलमान सिपाही ताऊन से शहीद होता तो हज़रत अबू उबैदह रज़ि रो पड़ते और अल्लाह से शहादत मांगते। एक रिवायत में है कि उस वक़्त आप यह दुआ पढ़ते कि हे अल्लाह ! क्या अबू उबैदह की ऑल का इस में अर्थात शहादत में हिस्सा नहीं। एक दिन हज़रत अबू उबैदह रज़ि की उंगली पर एक छोटी सी फुंसी निकली। इस को देखकर आपने कहा उम्मीद है कि अल्लाह इस थोड़े में बरकत डालेगा और जब थोड़े में बरकत हो तो वो बहुत हो जाता है।

इरबा ज़बन सारिया वर्णन करते हैं कि जब हज़रत अबू उबैदह रज़ि ताऊन से बीमार हुए तो मैं उनकी सेवा में हाज़िर हुआ तो हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने मेरे से फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि जो ताऊन से मरे वह शहीद है। जो पेट की बीमारी से मरे वह शहीद है। जो डूब कर मरे वह शहीद है और जो छत के गिरने से दब कर मर जाए वह शहीद है। जब हज़रत अबू उबैदह रज़ि का आख़िरी वक़्त आया तो लोगों से फ़रमाया कि लोगो! मैं तुम्हें एक वसीयत करता हूँ अगर स्वीकार करोगे तो फ़ायदे में रहोगे। नसीहत यह है कि नमाज़ को क़ायम करना। ज़कात अदा करना। रमज़ान के रोज़े रखना। सदक़ा देते रहना। हज करना। उमरा करना। एक दूसरे को अच्छी बातों की नसीहत करना। अपने उमरा से ख़ैर ख़्वाही करना। उन्हें धोखा न देना। देखो तुम्हें औरतें तुम्हारे कर्तव्यों से ग़ाफ़िल न कर दें। अगर आदमी हज़ार साल भी ज़िन्दा रहे तब भी एक दिन उसे इस दुनिया से विदा होना है जैसा मैं रुख़स्त हुआ चाहता हूँ। अल्लाह ने आदम की सन्तान के लिए मौत मुक़द्दर कर रखी है। हर शख़्स मरेगा। अक़लमंद वह है जो मौत के लिए तैयार रहता है और उस दिन के लिए तैयारी करता है। अमीरुल मोमनीन को मेरा सलाम पहुंचा देना और निवेदन करना कि मैंने तमाम अमानतें अदा कर दी हैं। फिर हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने फ़रमाया कि मुझे मेरे फ़ैसला के अनुसार यहीं दफ़न कर देना। अत: अरदन की ज़मीन में वादी बे में आप की क़ब्र है। कुछ रिवायतों के अनुसार हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह रज़ि जाबिया से बैयतुल-मुक़द्दस की तरफ़ नमाज़ पढ़ने के लिए जा रहे थे तो रास्ता में आप की वफ़ात का वक़्त आ गया और दूसरी रिवायत के अनुसार आप की वफ़ात शाम के इलाक़ा फ़िहल में हुई और आप की क़ब्र बअसान स्थान के पास है। हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने मौत की बीमारी में हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि को अपना क़ायमक़ाम निर्धारित फ़रमाया। जब हज़रत अबू उबैदह रज़ि की वफ़ात हुई तो हज़रत मआज़ रज़ि ने लोगों से कहा हे लोगो! आज हम में से वह शख़्स जुदा हुआ है जिससे ज़्यादा साफ़-दिल,द्वैष रहित, लोगों से मुहब्बत करने वाला और उनका ख़ैर-ख़्वाह मैं ने नहीं देखा। दुआ करो कि अल्लाह उस पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाए।

(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब, भाग 2 पृष्ठ 31 से 33) (सैरुल आलाम अन्बला, भाग 1 पृष्ठ 22-23 अबू उबैदह बिन अलजराह, मुअसस अलरिसाला बेरूत लबनान 1996 ई)

हज़रत अब्बू उबैदह बिन जर्राह रज़ि ने 18 हिज्री में वफ़ात पाई। उस वक़्त आप की उम्र 58 साल थी।

(इस्तीआब, भाग 2 पृष्ठ 343 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2010 ई)

एक बार हज़रत उम्र रज़ि ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि को चार हज़ार दिरहम और चार सौ दीनार भिजवाए और अपने क़ासिद से फ़रमाया कि देखना वह इस माल का क्या करते हैं। अत: जब वह क़ासिद यह माल लेकर हज़रत अबू उबैदह रज़ि के पास पहुंचा तो हज़रत अबू उबैदह रज़ि ने सारी रक़म लोगों में बांट दी। क़ासिद ने यह सारी घटना हज़रत उमर रज़ि से बयान की जिस पर हज़रत उम्र रज़ि ने फ़रमाया अल्लाह का शुक्र है कि उसने इस्लाम में अबू उबैदह रज़ि जैसे पैदा किए।

हज़रत उम्र रज़ि ने एक बार अपने साथियों से कहा किसी चीज़ की इच्छा करो। किसी ने कहा मेरी इच्छा है कि यह घर सोने से भर जाए और मैं उसे अल्लाह की राह में ख़र्च करूँ और सदक़ा कर दूं। एक शख़्स ने कहा कि मेरी इच्छा है कि यह मकान हीरे जवाहरात से भर जाए और मैं उसको अल्लाह की राह में ख़र्च करूँ और सदक़ा कर दूं। फिर हज़रत उमर रज़ि ने कहा और इच्छा करो। उन्होंने कहा हे अमीरुल मोमनीन हमें समझ नहीं आ रही कि हम क्या इच्छा करें। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि मेरी यह इच्छा है कि यह घर हज़रत अब्बू उबैदह बिन जराह रज़ि और हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि और सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ह रज़ि और हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि जैसे लोगों से भरा हुआ हो अर्थात ऐसे वे लोग हों।

(अल-मुस्तदरिक अलस्सहीहैन, भाग 3 पृष्ठ 252 हदीस 5005 किताब मअरफ़तुस्सहाबा ज़िक्र मनाक़िब सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

अत: क्या ख़ुश-क़िस्मत हैं ये लोग जो दुनिया में भी अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले थे और अगले जहान में भी उस की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले हैं। आज उनका ज़िक्र ख़त्म हुआ।

कुछ जनाज़े पढ़ाऊंगा। उनका ज़िक्र यूं है। एक हमारे शहीद प्रोफ़ैसर डाक्टर नईमुद्दीन खटक साहिब पुत्र फ़ज़लुद्दीन खटक साहिब ज़िला पेशावर हैं जो पिछले दिनों में शहीद हुए थे। 5 अक्तूबर को दोपहर डेढ़ बजे फ़ायर कर के उनको विरोधियों ने शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। यह लगभग डेढ़ बजे स्पेर म्यूर साईंस कॉलेज जिसमें पढ़ाते थे वहां से पढ़ाने के बाद अपने घर जा रहे थे तो दो मोटर साईकल सवार आए और उन्होंने फायरिंग कर के उनको मौके पर शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप की उम्र 56 साल थी। पच्चीस साल से आप पठन पाठन से जुड़े हुए थे। उन्होंने क़ायदे आज़म यूनीवर्सिटी से एम फिल किया था और इस के बाद स्कॉलरशिप पर चीन चले गए। वहां माईक्रो अनवायरनमेंटल बाएआलोजी में पी एचडी की। इस के बाद इस्लामिया कॉलेज यूनीवर्सिटी में सेवा करने लगे। पेशावर यूनीवर्सिटी में पढ़ाते रहे। पी एचडी का जो पैनल होता है लोगों के, लड़कों के, स्टूडैंटस के इंटरव्यू लेने वाला उस के मैंबर थे। पाकिस्तान के विभिन्न शैक्षिक संस्थाएं उनको लैक्चर के लिए बुलाते रहते थे। यह शिक्षा विभाग से जुड़े हुए थे।

उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके दादा रुकनुद्दीन साहिब खटक के माध्यम से हुआ जो ज़िला कर्क के थे और दादी आदरणीया बी-बी नूर नामा साहिबा भी अहमदी हुईं। उनके पिता का नाम शेर ज़मान था जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे और कादियान से वापसी पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम की तरफ़ से उन्हें एक कुर्ता मुबारक भी तोहफ़े में मिला था। यह तबर्रुक उनकी फ़ैमिली में अभी तक है। शहीद मरहूम के पिता फ़ज़लुद्दीन साहिब लाईव स्टाक विभाग में वेटरनरी डाक्टर थे और डिप्टी डायरेक्टर के ओहदे से रिटायर हुए। प्रसिद्ध शायर भी थे। उनकी माता महबूब साहिबा डिप्टी डायरेक्टर शिक्षा विभाग की थीं वहीं से रिटायर्ड हुईं। कई साल उनकी फ़ैमिली को विरोध पूर्ण हालात का सामना करना पड़ा। शहीद मरहूम के सुसर बशीर अहमद साहिब ऐडवोकेट सदर जमाअत अच्चीनी पायान पेशावर 2019 ई में अग़वा किए गए थे। उनका अभी तक कुछ पता नहीं लगा कि यह कहाँ हैं। अभी मिले नहीं। शहीद मरहूम विशेष विशेषताओं के मालिक थे। जमाअत के सवाओं के तौर पर बावजूद इस कारण से कि यह पढ़े लिखे थे लेकिन सैक्योरिटी डयूटी देने के लिए हाज़िर होते थे। मेहमान-नवाज़ी उनकी बड़ी विशेषता था। लोगों की हमदर्दी, ग़रीबों की सहायता, ख़ानदान के हर आदमी से हमदर्दी का सम्बन्ध, शिक्षा की तरफ़ विशेष ध्यान था। अहमदी बच्चों को बार-बार शिक्षा प्राप्त करने की नसीहत करते। अपने बच्चों को भी उच्च शिक्षा दिलवाई। उनकी पत्नी आदरणीया सादिया बुशरा साहिबा ने बताया कि शहीद मरहूम शहादत से एक सप्ताह पहले रब्वाह आकर जब बहिश्ती मक़बरा में गए तो कहा कि काश हमें भी

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

यहां जगह मिले लेकिन फिर कहने लगे कि हमारी क़िस्मत कहाँ कि हमें यहां जगह मिले। बहरहाल अल्लाह तआला ने उनकी इस इच्छा को इस तरह पूरा किया कि उनको रब्वह दफनाया गया है। शहीद मरहूम के निसबती भाई डाक्टर मुनीर अहमद ख़ान हैं जो आजकल ताहिर हार्ट में काम करते हैं वह भी यही कहते हैं कि शहीद ने उनको बताया था कि एक विरोधी प्रोफ़ैसर है जो उनकी और उनके बच्चों की तस्वीरें विरोधियों को दिखाता है और उनको जोश दिला रहा है कि इनको मार दो। उनके घर के बाहर भी विरोधियों के बैनर लगाए गए थे और कहते हैं कि वफ़ात से एक हफ़्ता पहले यहां मुझे मिलने आए तो मैंने कहा हमारे साथ खाना खालें। कहने लगे नहीं खाना में लंगर ख़ाना में खाऊंगा और जो मज़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लंगर के खाने का है और जो बरकत वहां से मिलती है वह कहीं और से नहीं मिलती। आइन्दा फिर कभी देखेंगे। शहीद मरहूम के वारिसों में उनकी पत्नी सादिया नईम साहिबा के इलावा तीन बेटियां और दो बेटे शामिल हैं। एक बेटी शादीशुदा हैं और बाक़ी दो बेटियां पढ़ाई कर रही हैं। एक बेटा उनका इंजनीयर है और एक बेटा पहले वर्ष का छात्र है। कलीमुद्दीन खटक इंजनीयर हैं और नूरुद्दीन खटक पहले वर्ष के छात्र हैं। उनके एक और रिश्तेदार नवीद अहमद साहिब अमीर जमाअत पेशावर जो जमाअत की सेवा कर रहे हैं वह भी उनके निसबती भाई हैं। अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके वारिसों को भी सब्र प्रदान फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा प्रिय उसामा सादिक़ पुत्र मुहम्मद सादिक़ साहिब का है। जामिआ अहमदिया जर्मनी के छात्र थे। पिछले दिनों जर्मनी में दरिया रावण में डूब कर वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। वफ़ात के वक़्त प्रिय की उम्र बीस साल थी। पाकिस्तान से चक सिकन्दर गुजरात के रहने वाले थे। बहन भाईयों में सबसे छोटे थे। उनके वारिसों में माता पिता के इलावा उनकी पाँच बहनें और एक भाई शामिल हैं। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके दादा की तरफ़ से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के दौर में आई थी और उनके दादा अपने दो भाईयों सहित अहमदी हुए थे। बाद में दूसरे तो अहमदियत से हट गए लेकिन उनके दादा अहमदियत पर क़ायम रहे। नानी की घर में अहमदियत उनके पड़नाना हज़रत शाह मुहम्मद साहिब और उनके वालिद हज़रत लंगर मुहम्मद साहिब के माध्यम से आई जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा में से थे जिन्होंने 1903 ई में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के हाथ पर जेहलम मैं बैअत की थी। चक सिकन्दर में 1989 ई में जमाअत के हालात बहुत ख़राब हो गए थे। अहमदियों के ख़िलाफ़ बहुत जलूस निकाले गए तो प्रिय के माता पिता को भी बड़ा विरोध का सामना करना पड़ा। प्रिय की माता को मारा पीटा भी गया। उनके पिता सादिक़ साहिब पर झूठा मुक़द्दमा बनाया गया जो सात साल तक चलता रहा। बहरहाल फिर यह जर्मनी आ गए। आरम्भिक शिक्षा तो उसने वहीं से प्राप्त की थी। यहां आ के फिर प्रिय ने जामिया में दाख़िला लिया और जामिया अहमदिया का तीसरा साल हाल ही में मुकम्मल किया था लेकिन बहरहाल अल्लाह तआला की तक़दीर थी कि उस को अपने पास बुला लिया।

उनके पिता का कहना है कि मैं मरहूम की जितनी भी प्रशंसा करूँ थोड़ी है क्योंकि उसने थोड़ी सी उम्र में बहुत काम किए। वह एक छात्र होते हुए बहुत ही होनहार बच्चा था। उस का ज़्यादा वक़्त पढ़ाई में गुज़रता। कोरोना के कारण से उसने छ: माह घर पर गुज़ारे थे। नमाज़ बाजमाअत के साथ साथ रमज़ान में रोज़े भी सारे रखे बल्कि वही नमाज़ की इमामत कराता और नमाज़ तरावीह भी जमाअत के साथ पढ़ाता था। छुट्टियों के बाद जामिया जाने की तैयारी कर रहा था परन्तु अल्लाह को प्यारा हो गया। उनकी माता कहती हैं बेपनाह ख़ूबियों का मालिक था और बड़ी ज़िम्मेदारी से हर काम करता था और यह भी कि जल्द मुकम्मल हो जाए। बड़ी सादा तबीयत थी। बहुत कम बोलने वाला था। ज़रूरत के वक़्त बात करता। माता पिता का बहुत अधिक आज्ञाकारी, मज़बूत इरादा रखने वाला, तबीयत संजीदा लेकिन दूर अंदेश। विभिन्न भाषाओं का जानने की कोशिश करता रहता था और इस के लिए अरबी, फ़ारसी और इंग्लिश और जर्मन पर खासतौर पर ध्यान देता था। जर्मनी के नैशनल सैक्रेटरी तब्लीग़ फ़रीद साहिब लिखते हैं कि उसामा कई ख़ूबियों का मालिक था। उनमें एक ख़ूबी शौक़ से तब्लीग़ी कामों में हिस्सा लेने की भी थी। अपनी वफ़ात से दो दिन पहले भी निरन्तर तीन दिन फ्लावर की तक़सीम के लिए पूर्वी जर्मनी गया था। जब भी फ्लावर तक़सीम करने का पूछा गया तो कभी इन्कार नहीं किया और बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। जामिया जर्मनी से पास मुरब्बी सुहैब नासिर हैं। वह कहते हैं कि मेरे से चार साल जूनीयर था लेकिन इबादत में वह मेरे लिए नमूना था। मस्जिद में नमाज़ के लिए प्राय पहली सफ़ में देखा। मस्जिद में नमाज़ से पहले आकर नवाफ़िल अदा किया करता। नमाज़ के बाद प्राय ज़िक्रे इलाही में व्यस्त रहता। उन छात्रों में शामिल था जो सबसे पहले मस्जिद आते और सबसे आख़िर पर मस्जिद से निकलते। इसी तरह जुमे की नमाज़ में भी पहली सफ़ में बैठता। जामिया की पढ़ाई में बड़ा संजीदा था। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। उसके माता पिता को और बहन भाईयों को सब्र प्रदान फ़रमाए।

अगला जनाज़ा सलीम अहमद मलिक साहिब का है जो यहां पहले तो हुकूमत में या शैक्षिक विभागों में शिक्षा विभाग से सम्बन्धित रहे। इस के बाद, रिटायरमेंट के बाद जब जामिया शुरू हुआ तो जामिया के उस्ताद भी रहे। 87 साल की उम्र में 24 सितम्बर को उनकी वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके दादा हज़रत मल्क नूरुद्दीन साहिब और पिता हज़रत मल्क अज़ीज़ अहमद साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा में से थे। उनके पिता जी की एक घटना उनकी माता ने इस तरह वर्णन की है कि मल्क साहिब के घर वाले लोगों में से, उनके ददीहाल में से एक-बार बहुत से लोग किसी बीमारी की कारण से वफ़ात पा गए तो उनकी माता ने अर्थात उन की दादी ने शायद हकीम मौलाना नूरुद्दीन साहिब को बच्ची की हालत बताई। मौलवी-साहब फ़ौरन उनको देखने के लिए उनके घर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि बच्चे की बचने की बहुत कम संभावना है। सिर्फ दुआ ही से बचा सकती है। इस के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्अव्वल रज़ि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में हाज़िर हुए और दुआ का निवेदन भी किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मस्जिद अकसा की सीढ़ियों पर ही मिल गए। वहीं दरख़ास्त की और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अभी जा कर बच्चे को देख लेते हैं। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी उनके घर तशरीफ़ ले गए और घर आकर बच्चे के माथे पर अपना हाथ रखा और फ़रमाया कि यह बच्चा इंशा अल्लाह ठीक हो जाएगा। अत: हुज़ूर अकदस की दुआ का ही चमत्कार था कि बच्चा ठीक हो गया और फिर मरहूम के पिता 70 साल तक जीवित रहे।

सलीम मलिक साहिब ने इबतिदाई तालीम कादियान से प्राप्त की थी। पाकिस्तान बनने के बाद स्यालकोट में रहने लगे। वहीं कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की ,फिर कराची तशरीफ़ ले गए। वहां साईंस के विषयों में शिक्षा प्राप्त की। 1960 ई में यू के आ गए। यहां रीडिंग यूनीवर्सिटी में कई साल तक ज्यूलोजीकल कैमिस्ट्री में प्रोफ़ैसर रहे। आरम्भ से ही मरहूम को यू के जमाअत में विभिन्न विभागों में काम की तौफ़ीक़ मिली। नैशनल सेक्रेटरी तालीम तथा तर्बीयत निर्धारित हुए। लंबा अरसा तक सैक्रेटरी उमूर ख़ारिजा रहे। जमाअत के इंटरनेशनल सम्बन्धों के विभाग में बहुत काम किया। अहमदियों के हालात का जायज़ा लेने वाली हियूमन राईट्स कमेटी के साथ दो बार पाकिस्तान जा कर रिपोर्ट तैयार करने की तौफ़ीक़ पाई। बहुत बड़ा इंटरनेशनल एक्सपो (expo) हर साल दुनिया के विभिन्न देशों में लगाया जाता है मलिक साहिब मरहूम को 1992 ई में यूके और स्पेन में जमाअत का स्टॉल लगाने

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

और उन को आर्गेनाईज़ करने का अवसर मिला। 1997 ई में जामिया अहमदिया की स्थापना के बारे में जो कमेटी हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-राबे ने स्थापित फ़रमाई थी इस में आप ने सलीम मलिक साहिब को भी शामिल फ़रमाया। इसी तरह जामिया अहमदिया यू.के के आरम्भ से पहले क़ायम की जाने वाली विभिन्न कमेटियों में भी हिस्सा लेते रहे। जामिआ अहमदिया यूके के आरम्भ पर आप को चीफ़ ऐडमिनिस्ट्रेटर निर्धारित किया गया। यह ज़िम्मेदारी 13 नवम्बर 2005 ई तक अन्जाम देते रहे। जामिआ अहमदिया के छात्रों को अंग्रेज़ी और तारीख़ पढ़ाने की तौफ़ीक़ मिली जो वफ़ात तक जारी रही। जब इस्लामाबाद ख़रीदा गया तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे की हिदायत पर आपको वहां बाक़ायदा लाइब्रेरी बनाने की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम बहुत धार्मिक, नमाज़ तथा रोज़ा के पाबन्द, लोगों के साथ इंतिहाई प्यार मुहब्बत करने वाले, अच्छा बोलने वाले, दाई इलल्लाह, मेहमान नवाज़, ख़िलाफ़त से बहुत मुहब्बत करने वाले, इख़लास तथा वफ़ा का सम्बन्ध रखने वाले बुज़ुर्ग थे। वारिसों में पत्नी के इलावा तीन बेटियां और बहुत संख्या में नवासे नवासियाँ हैं।

उनके भांजे मियां अब्दुल वहाब कहते हैं कि उन्होंने बताया कि जब वह 1960 ई में लंदन आए तो उस वक़्त उनके पिता मलिक अज़ीज़ अहमद साहिब ने उनको नसीहत की थी। वह बीमार थे लेकिन उन्होंने अपने बेटे को नसीहत की और वे नसीहतें ये थीं। नंबर एक यह कि जमाअत से सम्बन्ध को कभी न छोड़ना। विलायत जा रहे हो यह न समझना कि वहां की रंगीनियों में गुम हो जाओ। नंबर दो चंदा हमेशा वक़्त पर पूरी शरह से अदा करना। यह भी नफ़्स की पवित्रता के लिए ज़रूरी है। नंबर तीन : कोई भी जब मदद मांगे तो पीछे नहीं हटना चाहे इस से जितनी भी तंगी आए। अत: कहते हैं मैं ने माता पिता की नसीहतों पर हमेशा अनुकरण किया। उनके भांजे लिखते हैं कि यह उन्होंने तो नहीं बताया लेकिन बाद में मेरे इल्म में आया कि एक बार उनके किसी अज़ीज़ को बड़ी रक़म की ज़रूरत थी तो अपना मकान बेच कर उस की ज़रूरत पूरी कर दी लेकिन अल्लाह तआला ने फिर नवाज़ा और इस से बड़ा मकान उनको मिल गया। इल्मी दृष्टि से बहुत इल्मी आदमी थे। मैं भी शुरू में जब मिला हूँ तो मेरा नहीं ख़्याल था, मेरा उनसे परिचय नहीं थी तो मैं समझता था कि बस एक आम अहमदी हैं और अंग्रेज़ी पढ़ा लेते हैं। उनकी अंग्रेज़ी ज़बान अच्छी होगी लेकिन बाद में पता लगा कि यह इख़लास तथा वफ़ा में भी बहुत बढ़े हुए थे और हर वक़त जमाअत की सेवा के लिए तैयार रहने वाले थे। ख़िलाफ़त से उनको बहुत सम्बन्ध और अक़ीदत थी। इल्मी दृष्टि से चलते फिरते इन्साईक्लो पीडिया थे। हर विषय पर खासतौर पर तारीख़ पर उनको उबूर था। इसके इलावा लिट्रेचर इंग्लिश में हो या उर्दू में इस से भी उनको बहुत मज़ा लेते थे लेकिन अपने इल्म का प्रदर्शन कभी नहीं करते थे। दूसरों को धार्मिक और दुनियावी इल्म के बढ़ाने की नसीहत भी देते रहते थे। और स्यासी और इल्मी और पाकिस्तानी कम्यूनिटी में भी उनके व्यापक सम्बन्ध थे और उन सम्बन्धों को भी हमेशा उन्होंने जमाअत के लाभों के लिए इस्तिमाल किया। जब मरहूम सैक्रेटरी उमूरे ख़ारिजा थे तो उन्होंने एवबरी (Ave bury) के साथ मज़बूत सम्बन्ध क़ायम किया। इन्हीं के माध्यम से हमारा, जमाअत का लार्ड एवबरी से सम्बन्ध हुआ था और मेरा पार्लीमैंट हाऊस का जो पहला विज़ट था इस में भी मलिक साहिब की नुमायां भूमिका थी।

मरवान सरवर गुल मुरब्बी सिलसिला अर्जनटाइन कहते हैं कि उनकी इल्मी शख़्सियत के कारण से जामिया के सब स्टूडैंटस को और मुझे भी उनका एक विशेष सम्मान था लेकिन जामिआ से फ़ारिग़ होने के बाद ज़ाती नौईयत का एक सम्बन्ध उन्होंने क़ायम किया और जब मेरी अर्जनटाइन में तक़र्रुरी हुई तो इस पर बहुत ख़ुशी हुई और मुझे कहते थे कि तुम मुबल्लिग़ हो इसलिए बहुत ज़्यादा काम करने की ज़रूरत है और कहा कि जमाअत का नाम रोशन करना और तब्लीग़ सही तरह करना और खासतौर पर वहां की भाषा सीखो और भाषा इस स्तर की ले जाओ कि अख़बारों में तुम्हारे आर्टीकल छपें। इल्मी दृष्टि से उनको यह बहुत शौक़ था। इसी तरह अपने छात्रों की दावत अपने घर में करते थे तो उस के बाद अपनी लाइब्रेरी में ले जाते थे। उनकी ज़ाती लाइब्रेरी भी थी। कई छात्रों ने मुझे लिखा है और मुरब्बियों ने भी लिखा। फिर कहते थे अच्छा मेरे घर आ के तुम्हारे लिए यह तोहफ़ा है कि तुम इस लाइब्रेरी में से अपनी पसन्द की कोई एक किताब ले जाओ। वही तुम्हारे लिए तोहफ़ा है और हमेशा यही कहते थे कि जामिया अहमदिया एक ग़ैरमामूली संस्था है जिस से ख़लीफ़तुल मसीह को बहुत आशाएं हैं। इसलिए इस संस्था से जुड़े वाक़फ़ीन ज़िन्दगी को ग़ैरमामूली इल्मी स्तर प्राप्त करना चाहिए। फिर मुरब्बी लिखते हैं कि अर्जनटाइन रवाना होने से पहले खासतौर पर नसीहत फ़रमाई कि भाषा पर ऐसा उबूर प्राप्त करना कि जैसा कि पहले मैं ने बयान किया है कि स्पेनिश भाषा में तुम्हारे निबन्ध छपें। और कहते हैं कि यह भी मुझे कहा कि मुझे ख़त लिखते रहा करना। कभी मेरे से सुस्ती हो जाती तो फिर ख़ुद ही सम्पर्क करते और मुझे ख़त लिखने को कहते।

अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके वारिसों को, उनके बच्चों को, उनकी नस्लों को भी इसी तरह वफ़ा के साथ ख़िलाफ़त और जमाअत से सम्बन्ध रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

नमाज़ के बाद इनके जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 7 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

..... पृष्ठ 1 का शेष

तुमको पादरियों और पंडितों और ज्ञानियों को मारने की आज्ञा नहीं। तुमको कोई बाग़ और दरख़्त काटने की आज्ञा नहीं। तुमको कोई इमारत गिराने की या उसे आग लगाने की आज्ञा नहीं और यदि कभी इन हिदायतों को तोड़ा गया तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सख़्त नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया। अरब के नियम के अनुसार औरतें भी लड़ाई में शामिल होती थीं और चूँकि वे दूसरों को क़त्ल करती थीं अत: वे ख़ुद भी क़त्ल की जाती थीं परन्तु एक अवसर पर एक लड़ाई के बाद जब एक औरत की लाश आपने देखी तो आपके चेहरे पर ग़म और ग़ुस्सा के आसार ज़ाहिर हुए और आपने फ़रमाया इस्लाम इसको पसन्द नहीं करता। ये काम इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध हुआ है।

(बुख़ारी, भाग 2 किताबुल जिहाद वस्सैर)

उहद की जंग में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक तलवार पेश की और फ़रमाया यह तलवार में उस व्यक्ति को दूंगा जो इस का हक़ अदा करने का वादा करे। बहुत से लोग इस तलवार को लेने के लिए खड़े हुए आप ने अबू दुजानह रज़ि अन्सारी को वह तलवार दी। लड़ाई में एक जगह मक्का वालों के कुछ सिपाही अबू दुजानह रज़ि पर हमला-आवर हुए। जब आप उनसे लड़ रहे थे तो आपने देखा कि एक सिपाही सबसे ज़्यादा जोश के साथ लड़ाई में हिस्सा ले रहा है। आपने तलवार उठाई और उस की तरफ़ लपके लेकिन फिर उस को छोड़कर वापस आ गए। आपके किसी दोस्त ने पूछा। आपने उसे क्यों छोड़ दिया। आपने जवाब में कहा। मैं जब उस के पास गया तो उस के मुँह से एक ऐसा फ़िक़रा निकला जिस से मुझे मालूम हुआ कि वह मर्द नहीं औरत है। उनके साथी ने कहा बहरहाल वह सिपाहियों की तरह फ़ौज में लड़ रही थी। फिर आपने उसे छोड़ा क्यों? अबू दुजानह रज़ि ने कहा मेरे दिल ने बर्दाश्त न किया कि मैं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दी हुई तलवार को एक कमज़ोर औरत पर चलाऊं। अत: आप औरतों के मान और सम्मान की हमेशा शिक्षा देते थे जिसके कारण से कुफ़्फ़ार की औरतें ज़्यादा दिलेरी से मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करती थीं। परन्तु फिर भी मुसलमान इन बातों की बर्दाश्त करते चले जाते थे। सिर्फ एक ही औरत थी जिसने शुरू से लेकर आख़िर तक इस्लाम के ख़िलाफ़ जंगों में हिस्सा लिया और मुसलमान शुहदा के नाक और कान काट लेने में बहुत मशहूर थी अर्थात हिन्दा। फ़तह मक्का के वक़्त आप ने सिर्फ उस के क़तल का हुक्म दिया परन्तु वह बाक़ी औरतों के साथ आई और मुसलमान हो गई और फिर आप ने उसे भी कुछ नहीं कहा। क्योंकि आप ने फ़रमाया तौबा ने इस के सारे गुनाहों को धो दिया है।"

(तफ़सीर कबीर, भाग 2 पृष्ठ 421 से 422 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर (उत्तर प्रदेश)

शेष पृष्ठ 9 पर

4 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए जमाअत के मर्दों तथा औरतों की एक बड़ी संख्या मिशन हाऊस के बाहरी सेहन में मौजूद थीं। बच्चियों के ग्रुपस अल-विदाई दुआइया नज़्में पढ़ रहे थे।

प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने मिशन हाऊस के बाहरी सेहन में बादाम का पौधा लगाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर लोगों के मध्य तशरीफ़ ले आए। हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए बच्चों को चॉकलेट प्रदान फरमाई। लोग अपने हाथ ऊंचा करते हुए अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कह रहे थे और औरतें विदा कहते हुए दर्शन के सौभाग्य से लाभान्वित हो रही थीं। 4 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और क़ाफ़िला महदी आबाद (हिमबर्ग) के लिए रवाना हुआ। मस्जिद ख़दीजा बर्लिन से महदी आबाद की दूरी 300 किलोमीटर है।

महदी आबाद एक क़स्बा Nahe और ज़िला Segeberg में स्थित है। Schleswig Holstein प्रान्त है और यह प्रान्त जर्मनी के उत्तर की तरफ़ है इस प्रान्त की राजधानी Kiel है और यह वही शहर है जिसके एक जर्मन बाशिंदे ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आप की ज़िन्दगी में पहचाना था और आप पर ईमान लाया था।

लगभग 3 घंटे के सफ़र के बाद 7 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ महदी आबाद पधारे। महदी आबाद से 7-8 किलोमीटर पहले पुलिस की गाड़ी ने क़ाफ़िला को Escort किया।

जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की गाड़ी महदी आबाद के बैरूनी गेट से अंदर दाख़िल हुई तो महदी आबाद और इर्द-गिर्द की जमाअतों से आए 11 सदस्य से अधिक जमाअत के मर्दों एवं औरतों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़े जोश भरे और अंदाज़ में स्वागत किया और नारे लगाते हुए हुज़ूर अनवर को मुबारकबाद कहा। बच्चों और बच्चियों ने अलग अलग ग्रुपों की सूरत में स्वागत गीत के और दुआइया नज़्में प्रस्तुत कीं।

महदी आबाद (Nahe) जमाअत के अतिरिक्त Husum, Pinne Berg, Bad Segeberg, Ditmarschen

Kiel, Schleshwig, Buxtehude, Lubeck Lneberg, Stade, Vechta, Bremen, Hamburg की जमाअतों से लोगों अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए पहुंचे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ 8 बजकर 30मिनट पर अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। क्षेत्र के मेयर Holger Fisher हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के स्वागत के लिए आए हुए थे। आदरणीय अब्दुर्रऊफ़ साहिब सदर जमाअत आबाद (Nahe) ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए मेयर साहिब से बातचीत फ़रमाई और हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद बैयतुल बसीर" में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

..... पृष्ठ 1 का शेष

तआला का भय पैदा होता है। और ख़ुदा तआला की मार्फ़त में जूँ-जूँ तरक़्क़ी होती है उसी तरह ख़ुदा तआला की अज़मत और उससे मुहब्बत पैदा होती जाती है। और इन्सान को क़ज़ा क़दर के नीचे रहने की इस लिए शिक्षा देता है कि इस में अल्लाह तआला की ज़ात पर तवक्कुल और भरोसा का गुण पैदा हो और वह राज़ी रहने की वास्तविकता से परिचित हो कर वह सच्ची शान्ति और सन्तोष जो नजात का मूल उद्देश्य और लक्ष्य है, प्राप्त करे।

अभी जो उदाहरण मैंने क़ुरआन शरीफ़ से कसम के बारे में दिया है कि وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ अर्थात क़सम है आसमान की जिस में अल्लाह तआला ने رَجْعٌ (रज्उन) को रखा है। سَمَآءٌ (समाउन) का शब्द फ़िज़ा और माहौल और बारिश और बुलंदी के अर्थों में बोला जाता है। رَجْعٌ (रज्उन) बार-बार समय पर आने वाली चीज़ को कहते हैं। बारिश बरसात में बार-बार आती है, इस लिए उसका नाम भी رَجْعٌ (रज्उन) है। इसी तरह पर आसमानी बारिश भी अपने वक़्तों पर आती है। وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ (अत्तारिक़:13) और क़सम है ज़मीन की कि वह इन वक़्तों में फूट निकलती है और हरियाली निकालती है।

बारिश की जड़ ज़मीन है। ज़मीन का पानी जो वाष्प बन कर ऊपर उड़ जाता है वह आकाश में पहुंच कर बारिश बन कर वापस आता है और इस अवस्था में चूँकि वह आसमान से आता है,इस लिए आसमानी कहलाता है। फिर बारिश की ज़रूरत के लिए एक और विशेष समय है। जब किसानों को ज़रूरत होती है। अगर बुआई के बाद पड़े,तो कुछ भी न रहे और फिर कई बार बढ़ने के लिए ज़रूरत होती है। अत: बारिश और मीहं की ज़रूरत और इसके लाभ और इसके आसमान से आने का नज़ारा बिल्कुल स्पष्ट है और एक कम दर्जा की अक़ल रखने वाला गँवार किसान भी जानता है। इसके अतिरिक्त यह बात भी याद रखने के योग्य है कि यदि आसमानी बारिश न हो तो ज़मीनी पानी भी ख़ुशक होने लगते हैं; अत: बारिश के रुकने के दिनों में बहुत से कुँएं ख़ुश्क हो जाते हैं और अक्सरों में पानी बहुत ही कम रह जाता है, परन्तु जब आसमान से बारिश आती है तो ज़मीनी पानियों में भी एक जोश और हरकत पैदा होने लगती है। मेरा अभिप्राय इस स्थान पर इस उदाहरण के वर्णन करने से यह है कि अल्लाह तआला ने इन कसमों को एक और बात के लिए गवाह के रूप में क़रार दिया है,क्योंकि इन नज़ारों से तो एक मामूली ज़मीन्दार भी परिचित ही है और वह बात जो इनके माध्यम से प्रामाणित की है वह यह है اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ (अत्तारिक़:14,15) निसन्देह यह ख़ुदा का कलाम है और सुदृढ़ बात है। और वह ठीक समय पर सच्ची ज़रूरत के साथ और हक़ तथा हिकमत के साथ आया है, बेहूदा तरीक़ा पर नहीं आया। अब देख लो कि क़ुरआन शरीफ़ जिस समय नाज़िल हुआ है। क्या उस वक़्त आध्यात्मिक निज़ाम यह नहीं चाहता था कि ख़ुदा तआला का कलाम नाज़िल हो और कोई आसमानी मर्द आए जो इस गुम हुए ख़जाना को वापस दिलाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भव के ज़माना का इतिहास पढ़ो तो मालूम हो जाएगा कि दुनिया की क्या अवस्था थी। ख़ुदा तआला की उपसना दुनिया से उठ गई थी और तौहीद के निशान मिट चुके थे। झूठ की उपासना और झूठे उपास्यों की उपासना ने प्रताप वाले अल्लाह का स्थान ले रखा था। दुनिया पर जहालत और अन्धकार का एक भयावह पर्दा छाया हुआ था। दुनिया में कोई देश,कोई भाग,कोई ज़मीन ऐसी न रह गई थी जहां एक ख़ुदा, हाँ जीवित करने वाले तथा स्वंय जीवित ख़ुदा की उपासना होती हो। ईसाईयों की मुर्दा की उपासना करने वाली क़ौम तस्लीस के चक्कर में फंसी हुई थी और वेदों में तौहीद का व्यर्थ दावा करने वाले हिन्दुस्तान के रहने वाले 33 करोड़ देवताओं के पुजारी थे। अत: स्वंय ख़ुदा तआला ने जो नक़्शा उस समय की हालत का इन शब्दों में खींचा है कि ظَهَرَ الْفَسَادُ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ (अर्रोम: 42)और यह बिल्कुल सच्चा है और इससे बेहतर इन्सानी भाषा और क़लम इस अवस्था को वर्णन नहीं कर सकती। अब देखो कि जैसे ख़ुदा तआला का क़ानून आम है कि ठीक बारिश के रुकने के समय आख़िर उसका फ़ज़ल होता और रहमत की बारिश बरस कर हरियाली प्रदान करती है, इसी तरह पर ऐसे समय में ज़रूर था कि ख़ुदा तआला का कलाम आसमान से नाज़िल होता। मानो इस जस्मानी बारिश के निज़ाम को दिखाकर रुहानी बारिश की तरफ़ मार्गदर्शन किया है। अब इस से कौन इनकार करेगा कि बारिश हमारे उद्देश्यों के अनुसार होती है। इससे अभिप्राय यह है कि जैसे वह निज़ाम रखा है इसी तरह दूसरी बारिशों के लिए वक़्त रखे हैं। अब देख लो कि क्या यह बारिश रुहानी का

वर्णन न था? कितने झगड़े तुम लोगों में फैले हुए थे। कर्म गंदे और ईमान भी गंदे थे। और दुनिया हलाकत के गढ़े में गिरने वाली थी, फिर वह क्यों अपने फ़ज़ल का मींह न बरसाता। जिसने नश्वर शरीर की सुरक्षा के लिए एक ख़ास निज़ाम रखा है,फिर रुहानी निज़ाम को कैसे छोड़ता। इस लिए बारिश के निज़ाम को बतौर गवाह प्रस्तुत करके कसम के रंग में प्रयोग किया, क्योंकि नबुव्वत एक रुहानी और आस्था वाला निज़ाम था और अरब के कुफ़्फ़ार इस निज़ाम को न समझ सकते थे,इस लिए वह पहला निज़ाम पेश करके उनको समझा दिया। अत: यह एक भेद है जिसको मूर्खों ने समझा नहीं और अपनी अज्ञानता और सच्चाई की शत्रुता के आधार पर एतराज़ कर दिया है। मूल अभिप्राय को जो अल्लाह तआला ने उस में लक्ष्य रखा था छोड़ दिया।

अल्लाह को क़र्ज़ देने का अर्थ

इसी तरह पर एक अज्ञान कहता है कि مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا (अलबकर:246) कौन व्यक्ति है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे। इस का अभिप्राय यह है कि मानो अल्लाह की पनाह ख़ुदा भूखा है। मूर्ख नहीं समझता कि इस से भूखा होना कहाँ से निकलता है? यहां क़र्ज़ का अर्थ असल तो यह है कि ऐसी चीज़ें जिनके वापस करने का वादा होता है इसके साथ ग़रीबी अपने से लगा लेता है। यहां क़र्ज़ से अभिप्राय ये है कि कौन है जो ख़ुदा तआला को नेक कर्म दे। अल्लाह तआला उनका बदला उसे कई गुना करके देता है। यह ख़ुदा की शान के योग्य है जो सिलसिला उबूदीयत का रबूबियत के साथ है। इस पर ग़ौर करने से इस का यह अभिप्राय साफ़ समझ में आता है। क्योंकि ख़ुदा तआला किसी की नेकी के बिना,दुआ और गिड़गिड़ने और बिना किसी अन्तर के काफिर तथा मोमिन की हर एक की परवरिश फ़र्मा रहा है और अपनी रबूबियत और रहमानियत के फ़ैज़ से सब को फ़ैज़ लाभ रहा है। फिर वह किसी की नेकियों को कब नष्ट करेगा? उस की शान तो यह है। مَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا یَّرَهٗ (अल-ज़िल्ज़ाल:8) जो ज़र्रा भी नेकी करे उसका भी बदला देता है और जो ज़र्रा बुराई करेगा। इस की सज़ा भी मिलेगी। यह है क़र्ज़ का मूल अभिप्राय जो इस आयत से पाया जाता है,चूँकि मूल अभिप्राय क़र्ज़ का इस से पाया जाता है। इस लिए यही कह दिया مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا (अलबकर:246) और इस की तफ़सीर इस आयत में मौजूद है فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا یَّرَهٗ (अल-ज़िल्ज़ाल:8)

ईसाइयों पर मुसीबत का कारण

अज्ञान ईसाई जिन्होंने एक असहाय और कमज़ोर इन्सान को ख़ुदा बना लिया है और अपने बुरे कामों और गुनाहों की गठड़ी उसके सिर पर रख दी है और उसे मलऊन स्वीकार किया है। बावजूद यह के उनके पास लानत के सिवा कुछ भी नहीं। दूसरों पर आरोप लगाते हैं। चूँकि ख़ुदा तआला की पवित्र शरीयत को कफ़्फ़ारा के आधार पर रद्द कर चुके हैं। नेक कर्मों में जो एक लज़्ज़त और आन्नद होता है,वह उन्हें प्राप्त नहीं और ख़ुदा तआला के सारे सच्चों को बटमार और डाकू क़रार देने के कारण से उन पर वह लानत पड़ी है। इसलिए यह बात कभी भूलनी नहीं चाहिए कि ख़ुदा तआला के सच्चों का इन्कार और झुठलाना एक ऐसी बात है जो इन्सान को हलाक कर देती है और इस की रुहानी ताक़तों और शक्तियों के लिए क़ात्ल करने वाल ज़हर का काम करती है। जो सच्चों के बारे में कुधारणा करता है और उसका अपमान करता है वह हक़ायक़ और मआरिफ़ से बेनसीब कर दिया जाता है। ये लानत ईसाइयों पर पड़ी है कि उन्होंने सारे रास्तबाज़ों को पापी ठहराया।

अत: इस आयत में यह सूक्ष्म बात है कि बारिशों का जिस्मानी तौर पर एक निज़ाम है। लोग जानते हैं कि अब बारिश के दिन निकट हैं। जैसे यह जानते हैं कि पोह और माघ के दिनों में बारिश होती है। और सावन और भादों के दिनों में होती है। फिर एक यह भेद है कि बारिश बेहूदा कभी नहीं होती। वास्तव में वही समय बारिश के लिए लाभदायक होते हैं। इसी तरह पर रुहानी बारिशों का सिल्सिला चलता है। यह एक स्पष्ट बेहस है। इस लिए ख़ुदा तआला ने मोटी मोटी बातों को गवाह के रूप में पेश किया है और कसम का शब्द गवाह के क़ायम मक़ाम वर्णन फ़रमाया। इस शब्द को इसी तरह बयान किया है जिस तरह पर क़र्ज़ के शब्द को जिसे मैं अभी बयान कर चुका हूँ।

मुहद्दिसीन और मुजद्ददीन का सिल्सिला

अब एक बात और विचार योग्य है कि एक बारिश बीज रोपण के लिए होती है और फिर एक बारिश इस बीज को बढ़ाने और हरियाली के लिए होती है। इसी तरह पर नबुव्वत की बारिश बीज रोपण के लिए होती है और मुहद्दिसीन और मुजद्दिदीन की बारिश जो نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अल हिज्र:10) के अन्तर्गत शामिल है। इस बीज के बड़े होने और तरक्की करने के लिए मैंने कई बार इस बात का वर्णन किया है कि नबुव्वत उलूहियत के लिए बतौर कील के होती है। जो व्यक्ति नबुव्वत का इन्कार करता है,धीरे-धीरे वह उलूहियत के इन्कार तक पहुंच जाता है। और नबुव्वत के लिए विलायत बतौर कील के होती है। वली के इन्कार से धीरे-धीरे ईमान छीन लिया जाता है।

इस समय देखो कि ख़ुदा पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तेरह सौ वर्ष से अधिक अरसा गुज़र गया। यदि ख़ुदा तआला उस वक़्त तक बिल्कुल ख़ामोश रहता और अपनी तजल्ली न फ़रमाता तो इस्लाम एक क़िस्सा और कहानी से बढ़कर कोई सम्मान न रखता और इस को दूसरे धर्मों पर कोई विशेषता और प्राथमिकता न होती। जैसे हिंदू अपने बुज़ुर्गों से सम्बन्धित चमत्कारों को पुराणों और शास्त्रों में लिखा हुआ वर्णन करते हैं और दिखा कुछ नहीं सकते, इसी तरह पर इस्लाम के आश्चर्य जनक निशानों का वर्णन मुसलमानों की किताबों ही में बताते और दिखा कुछ नहीं सकते,तो दूसरे धर्मों पर इस को क्या महानता रहती और इन्सान की फ़ितरत इस तरह से बनी है कि यदि उसे दूसरे पर कोई प्राथमिकता नज़र न आए तो इससे अनिच्छा और बेदिली प्रकट करता है। इस तरह पर मानो इस्लाम की एक प्रकार की कमज़ोरी ईमान में पैदा होती है क्योंकि महानता के बिना ईमान दृढ़ रह सकता ही नहीं। इस लिए नबुव्वत को बढ़ावा देने के लिए विलायत की एक बाड़ लगा दी गई है। अत: ध्यान करके देखो कि क़सम पर एतराज़ करने वालों का उत्तर कैसा साफ़ और स्पष्ट है।

वह्य के रुकने में हिक्मत

इस विषय को देखकर इन्सान कुछ खुले दिल के साथ स्वीकार कर सकता है कि क़ुरआन करीम कितने उच्च विषयों को किस अंदाज़ और से वर्णन करता है। फिर क़ुरआन शरीफ़ में एक स्थान पर रात की क़सम खाई है। कहते हैं कि यह उस वक़्त की क़सम है जब वह्य का सिल्सिला बंद था। याद रखना चाहिए कि यह एक स्थान है। जो उन लोगों के लिए जो वह्य के सिलसिला से लाभ प्राप्त करते हैं,आता है। वह्य के सिलसिला से शौक़ और मुहब्बत बढ़ती है परन्तु दूरी में भी एक कशिश होती है जो मुहब्बत के उच्च स्तर पर पहुंचाती है। अल्लाह तआला ने इस को भी एक माध्यम क़रार दिया है। क्योंकि इस से वेदना और सानिध्य में तरक़्क़ी होती है। और रूह में एक व्याकुलता और वेदना पैदा होता है जिस से वह दुआओं की रूह इस में फूंकी जाती है कि वह अल्लाह तआला के आस्ताना पर हे रब! हे रब! कह कर और बड़े जोश और शौक़ और भावना के साथ दौड़ती है। जैसा कि एक बच्चा जो थोड़ी देर के लिए माँ की छातियों से अलग रखा गया हो अपने आप माँ की तरफ़ दौड़ता और चिल्लाता है,इसी तरह पर बल्कि इससे भी बहुत अधिक वेदना के साथ रूह अल्लाह की तरफ़ दौड़ती है और इस दौड़ धूप और वेदना तथा व्याकुलता में वह मज़ा और आन्नद होता है जिसको हम वर्णन नहीं कर सकते। याद रखो! रूह में जितनी वेदना और व्याकुलता ख़ुदा तआला के लिए होगी उतनी दुआओं की तौफ़ीक़ मिलेगी और उनमें स्वीकारियता की रूह होगी। अत: यह एक ज़माना मामूरों और मुर्सलों और उन लोगों पर जिनके साथ अल्लाह तआला की वार्तालाप का एक सम्बन्ध होता है,आता है और इससे उद्देश्य अल्लाह तआला का यह होता है कि ताकि उनको मुहब्बत की मिठास और दुआ की कुबूलियत के आन्नद से हिस्सा दे और उनको उच्च स्तर पर पहुंचा दे तो यहां जो ज़ुहा (दिन) और लैल (रात) की क़सम खाई, इस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च स्तर और मुहब्बत के दर्जों का वर्णन है। और आगे ख़ुदा के पैग़म्बरा का वर्णन किया कि देखो दिन और रात जो बनाए हैं इन में कितना वक़फ़ा एक दूसरे में डाल दिया है। ज़ुहा का वक़्त भी देखो और अन्धकार का वक़्त भी ख़्याल करो। مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ। ख़ुदा तआला ने तुझे विदा नहीं कर दिया। उसने तुझ से द्वेष नहीं किया बल्कि हमारा यह एक क़ानून है। जैसे रात और दिन को बनाया है इसी तरह अम्बिया अलैहिमुस्सालम के साथ भी एक क़ानून है कि कई वक़्त वह्य को बंद कर दिया जाता है ताकि उनमें दुआओं के लिए ज़्यादा जोश पैदा हो। और ज़ुहा (दिन) और लैल (रात) को इसलिए गवाह के रूप में वर्णन फ़रमाया। ताकि आप की उम्मीद व्यापक हो और तसल्ली और सन्तोष पैदा हो। सारांक्ष यह कि अल्लाह तआला ने इन कस्मों के वर्णन करने से मूल लक्ष्य रखा है कि ताकि छुपी बातों को स्पष्ट बातों के माध्यम समझाए। अब सोच कर देखो कि यह कैसी हिक्मत वाली बात थी परन्तु इन हतभागों ने इस पर भी एतराज़ किया।

चशम बद-अंदे: कि बर कुंद: बाद
ऐब नमाईद हुनरशि दर नज़र

इन कसमों में ऐसा दर्शन भरा हुआ है कि हिक्मत के दरवाज़ें खुलते हैं।

इस ज़माना का जिहाद

अत: यह जंग हमारा काम है जिसकी आज ज़रूरत है। इससे ज्ञान के दरवाज़े भी खुलते हैं ओर विरोधी भी हुज्जत और स्पष्ट तर्कों से हलाक हो जाते हैं। और यह ख़ुदा का फ़ज़ल है कि पंजाब के लोग जिन मआरिफ़ और हक़ायक़ से परिचित होते जाते हैं सीरिया और अन्य इस्लामी देशों में उनका नामोनिशान तक नहीं है। इस लिए हम पर तो यह मुसीबत आ चुकी है। हर तरफ़ से हमले पर हमला हो रहा है। इस लिए हमको चिन्तन की शक्ति से काम लेना पड़ता है और दुआओं के माध्यम से ख़ुदा तआला के समक्ष उन कठिनाइयों को पेश करना पड़ता है, जिसका नतीजा यह होता है कि ख़ुदा तआला केवल अपनी दया तथा उपकार से हमारी मुश्किल दूर फ़रमाता है और अपनी किताब के हक़ायक़ और मआरिफ़ से सूचना देता है। दार्शिनक कहते हैं कि जिस शक्ति को चालीस दिन प्रयोग न किया जाए वह बेकार हो जाती है। हमारे एक मामूं साहिब थे वह पागल हो गए। उनकी रग खोली गई और उनको ताकीद की गई कि हाथ न हिलाएँ। उन्होंने कुछ महीने तक हाथ न हिलाया। नतीजा यह हुआ कि हाथ लकड़ी की तरह हो गया। अत: यह है कि जिस अंग से काम न लिया जाए वह बेकार हो जाता है।

हिंदुओं में योगी और ऐसा ही राहिब इत्यादि जो औरतों के योग्य नहीं रहते। इसके दो ही कारण होते हैं। या तो बद-मआशियों की अधिकता की कारण से या सम्पूर्ण विच्छेद के बाद और इस बात के हज़ारों उदाहरण मौजूद हैं कि जिन अंगों को बेकार छोड़ा गया वे अन्त में बिल्कुल निकम्मे हो गए।

इस समय जो हम पर क़लम की तलवारें चलाई जातीं हैं ओर आरोपों के तीरों की बोछाड़ हो रही है। हमारा कर्तव्य है कि अपनी कुव्वतों को बेकार न करें और ख़ुदा के पवित्र धर्म और इसके सम्मान्नीय नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत को सिद्ध करने के लिए अपने कलमों के भालों को तेज़ करें। विशेष कर के ऐसी आवस्था में कि अल्लाह तआला ने सबसे बढ़कर हमको यह अवसर दिया कि उसने सल्तनत अंग्रेज़ी में हमको पैदा किया।

उपकार का सम्मान करना हमारी फितरत में है।

उपकारी के उपकारों की शुक्रगुज़ारी के नियमों से आज्ञान मूर्ख हमारे इस कसम के वर्णनों और लेखनी को ख़ुशामद कहते हैं परन्तु हमारा ख़ुदा बेहतर जानता है कि हम दुनिया में किसी इन्सान की ख़ुशामद कर सकते ही नहीं। यह शक्ति ही हम में नहीं है। हाँ उपकार का सम्मान करना हमारी फितरत में है और उपकारी को भूलना और ग़द्दारी का अपवित्र माद्दा उसने अपने फ़ज़ल से हम में नहीं रखा। हम गर्वनमेंट इंग्लिशिया के उपकारों का सम्मान करते हैं और उस को ख़ुदा का फ़ज़ल समझते हैं कि उसने एक न्याय करने वाली गर्वनमेंट को सिख्खों के .... ज़माना से नजात दिलाने के लिए हम पर हुकूमत करने को कई हज़ार कोस से भेज दिया। यदि इस सल्तनत का वजूद न होता तो मैं सच कहता हूँ कि हम इस प्रकार के एतराज़ों के बारे में ज़रा भी सोच न सकते, कहां हम उनका उत्तर दे सकते।

अब हम इन आरोपों का उत्तर बड़ी आज़ादी से दे सकते हैं। फिर यदि हम अल्लाह तआला के इस उपकार का सम्मान न करें तो निसन्देह समझो कि बड़े न क़द्रशनास और नाशुक्रगुज़ार होंगे। हमको ध्यान और चिन्तन का अवसर मिला, दुआओं का मौक़ा मिला और इस तरह पर ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़ल के दरवाज़े हम पर खोले; यद्यपि फ़ैज़ का स्रोत वही है परन्तु इन्सान अपने में योग्य चीज़ बनाता है। इस पर उसकी योग्यता और हौसला अनुसार लाभ मिलता है। यह ख़ुशी की बात है कि इस आयोजन के कारण से हिन्दुस्तान और पंजाब के रहने वाले काबिल जौहर बन रहे हैं ओर उनकी इल्मी ताक़तें भी तरक़्क़ी कर रही हैं।

इस ज़माना का हथियार क़लम है

सारांक्ष यह कि यह स्थान दारुल हर्ब है पादरियों के मुक़ाबला में। इस लिए हमको चाहिए कि हरगिज़ व्यर्थ न बैठें। परन्तु याद रखो कि हमारी लड़ाई उनके जैसी हो। जिस प्रकार के हथियार लेकर मैदान में वे आए हैं, इसी तरीका के हथियार हमको लेकर निकलना चाहिए और वह हथियार है क़लम। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने इस विनीत का नाम सुल्तानुल-क़लम रखा और मेरे क़लम को ज़ुल्फ़क़ार अली फ़रमाया। इस में यही भेद है कि यह ज़माना जंग तथा लड़ाई का नहीं है बल्कि क़लम का ज़माना है।

फ़तह के लिए तक़्वा की ज़रूरत है।

फिर जब यह बात है तो याद रखो कि हक़ायक़ और मआरिफ़ के दरवाज़ों के खुलने के लिए ज़रूरत है तक़्वा की, इस लिए तक़्वा धारण करो, क्योंकि ख़ुदा तआला फ़रमाता है।

إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ

(अन्नहल:129) और मैं गिन नहीं सकता कि यह इल्हाम मुझे कितनी बार हुआ है। बहुत ही प्रचुरता से हुआ है

यदि हम निरी बातें ही बातें करते हैं तो याद रखो कुछ लाभ नहीं है। विजय के लिए ज़रूरत है तक़्वा की। फ़तह चाहते हो तो मुत्तक़ी बनो।

इस्लाम के प्रचार के लिए आर्थिक क़ुर्बानियों की ज़रूरत है।

मैं हिंदुओं और ईसाइयों में देखता कि औरतें भी बहुत बड़ी जायदादें और रुपया इस काम के लिए वसीयत कर जाती हैं। आजकल के मुसलमानों में इस प्रकार के उदाहरण नहीं मिलते। हमारे लिए जो बड़ी से बड़ी मुश्किल है वह प्रचार के लिए आर्थिक सहायता की ज़रूरत है। यह तो तुम याद रखो कि आख़िर ख़ुदा तआला ने यह इरादा फ़रमाया है और ख़ुद अपने हाथ से उसने इस सिलसिला को स्थापित किया है। वह ख़ुद ही इस का सहायक तथा मदद देने वाला है परन्तु वह चाहता है कि अपने बन्दों को सवाब का अधिकारी बनाए इस लिए नबियों को आर्थिक सहायता की ज़रूरत ज़ाहिर करनी पड़ती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम ने मदद मांगी और इसी तरीका पर जो नबुव्वत की प्रणाली का तरीक़ा है हम भी अपने दोस्तों को सिल्सिला की ज़रूरतों से सूचना दिया करते हैं,परन्तु मैं फिर यही कहूँगा कि अगर हम कुछ रुपया भी प्रचार के लिए जमा कर लें तो यह तो ज़ाहिर बात है कि इतना नहीं कर सकते जितना पादरियों के पास है और अगर इतना भी कर लें तो भी मेरा ईमान यही है कि फ़तह उसी को मिलती है जिस से ख़ुदा ख़ुश हो।

आचरण तथा कर्मों में उन्नति करें।

इस लिए ज़रूरी बात यह है कि हम अपने आचरण और कर्मों में तरक़्क़ी करें और तक़्वा धारण करें ताकि ख़ुदा तआला की सहायता और मुहब्बत का फ़ैज़ हमें मिले। फिर ख़ुदा की मदद को लेकर हमारा फ़र्ज़ है और हर एक हम से जो कुछ कर सकता है इस को अनिवार्य है कि वह इन हमलों के उत्तर देने में कोई सुस्ती न करे। हाँ उत्तर देते वक़्त नीयत यही हो कि ख़ुदा तआला का प्रताप प्रकट हो।

जनवरी 1898 ई मर्कज़ में आने की नसीहत

फ़रमाया: लोग मेरे हाथ पर हाथ रखकर यह तो कह जाते हैं कि धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दूँगा, परन्तु यहां से जाकर इस बात को भूल जाते हैं वह क्या लाभ उठा सकते हैं अगर वे यहां न आएंगे? दुनिया ने उनको पकड़ रखा है। अगर धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता होती तो वे दुनिया से फ़ुर्सत पाकर यहां आते।

1 फरवरी 1898 ई

"आज तीसरा दिन है। इल्हाम हुआ कि يَوْمَ تَأْتِيْكَ الْغَاشِيَةُ يَوْمَ تَنْجُوْ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ يَوْمَ نَجْزِيْ كُلَّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ। अर्थात एक भयावह मूर्छा डालने वाला। इन्सान को चारों तरफ़ से घेरने वाला समय आने वाला है। उस समय हर एक व्यक्ति अपने कर्मों के कारण से नजात पाएगा। उस समय हम हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार बदला देंगे।

हज़रत ने इन इल्हामों के बाद जमाअत को बड़ी नसीहत की कि " तैयारी करो। नमाज़ों में विनम्रता करो। तहज्जुद की आदत डालो। तहज्जुद में रो-रो कर दुआएं माँगो कि ख़ुदा तआला गिड़गिड़ाने वालों और तक़्वा धारण करने वालों को नष्ट नहीं करता..'

हमारे मुबारक इमाम अलैहिस्सलाम भी बार बार यही वसीयत फ़रमाते हैं कि "जमाअत मुत्तक़ी बन जाए और नमाज़ों में विनय तथा विनम्रता की आदत करें और एक दिन बड़े दर्द से फ़रमाया कि सुधार और तक़्वा पैदा करें। ऐसा न हो कि तुम मेरी राह में रोक बन जाओ।"

बाहरी देशों में जाने वालों के लिए विशेष नसीहतें

बाबू मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब ने हिन्दुस्तान से पूर्वी अफ़्रीक़ा की तरफ़ रवानगी के अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम से निवेदन किया की जिस स्थान से मैं सैंकड़ों प्रकार की शंकाएं तथा शक और नफ़सानी अन्धकारों का एक उमड़ा हुआ दरिया साथ लाया था अब चूँकि फिर मैंने वहीं रवाना होना है,इस लिए मेरे लिए दुआ की जाए। हज़रत अक़दस ने ऐसी मुश्किलों से निकलने के लिए निम्नलिखित चार बातें बतौर इलाज बताईं।

(1)क़ुरआन की तिलावत करते रहना। (2)मौत को याद रखना। (3)सफ़र के हालात लिखते रहना। (4) अगर संभव हो तो हर दिन एक कार्ड लिखते रहना।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ

दुआ के पवित्र शब्द जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक होंठों से

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 12 November 2020 Issue No.46

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

निकले हुए हैं। "हे सारे संसारों के रब्ब! तेरे उपकारों का मैं शुक्र नहीं कर सकता। तू बहुत हू कृपालु तथा दयालु है और तेरे असीम मुझ पर उपकार हैं। मेरे गुनाह क्षमा कर मैं हलाक न हो जाऊं। मेरे दिल में अपनी ख़ालिस मुहब्बत डालता मुझे ज़िन्दगी प्राप्त हो और मेरी पर्दापोशी फ़र्मा और मुझ से ऐसे कर्म करा जिनसे तू राज़ी हो जाए। मैं तेरे सम्मान्नीय चेहरे के साथ इस बात की पनाह मांगता हूँ कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हो। रहम फ़र्मा और दुनिया और आख़िरत की बलाओं से मुझे बचा कि हर एक दया तथा रहम तेरे ही हाथ में है। आमीन आमीन। सुम्मा आमीन।

हज़रत अक़्दस की पवित्र बातें

फरवरी 1898 ई

मुरीद और मुर्शिद का सम्बन्ध

फ़रमाया: "मुरीद तथा मुर्शिद के सम्बन्ध ऐसे होते हैं कि माँ बाप औलाद को इतना प्रिय नहीं समझते जितना मुर्शिद मुरीद को जानता है। माँ बाप जिस्मानी तर्बीयत और शिक्षा के लिए कोशिशें करते हैं परन्तु मुर्शिद मुरीद की रुहानी जन्म का कारण होता है और इस की भीतरी शिक्षा और तर्बीयत का ज़िम्मेदार होता है शर्त यह है कि सच्चा हो। यदि धोखा करने वाला और धोखाबाज़ हो तो वह दुश्मन से भी बुरा होता है।

फरवरी 1898 ई

एक से अधिक पत्नियां

एक से अधिक पत्नियों के बारे में स्पष्ट शब्द क़ुरआन करीम में दो-दो ,तीन तीन,चार चार करके ही आए हैं परन्तु इसी आयत में मध्य मार्ग की हिदायत भी है। यदि मध्यमार्ग न हो सके और मुहब्बत एक तरफ़ अधिक हो जाए या आय कम हो और या पौरुष में ही कमज़ोरी हो तो फिर एक से अधिक करनी नहीं चाहिए। हमारे निकट यही बेहतर है कि इन्सान अपने आप को परीक्षा में न डाले क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ (अलबकर:191)

हलाल पर भी ऐसा ज़ोर न मारो कि नफ़्स परसत ही बन जाओ। अत: यदि हलाल को हलाल समझ कर बीवियों ही का बंदा हो जाए तो भी ग़लती करता है। हर एक व्यक्ति अल्लाह तआला की इच्छा को नहीं समझ सकता। इस की यह इच्छा नहीं कि बिल्कुल औरतों के मुरीद हो कर नफ़्स की उपासना करे वाले ही हो जाओ और वह यह भी नहीं चाहता कि रहबानीयत (वैराग्य) धारण करो बल्कि मध्यमार्ग से काम लो और अपने आप को व्यर्थ के कामों में न डालो।

अम्बिया अलैहिमुस्सालम के लिए कोई न कोई विशेषता यदि अल्लाह तआला कर देता है यह बुरा चाहने वाले लोगों का धोखा खाना और ग़लती है कि वे इस पर एतराज़ करते हैं। देखो तौरात में काहिनों के सम्प्रदाय के साथ विशेष सुविधाएं रखा गया है ओर हिन्दुओं के ब्राह्मणों के लिए विशेष सुविधाएं हैं। अत: यह मूर्खता है कि अंबिया अलैहिमुस्सालम की किसी छूट पर एतराज़ किया जाए। उनका नबी होना ही सबसे बड़ी विशेषता है जो अन्य लोगों में मौजूद नहीं।

ख़ुदा की कठोरता भी रहमत है

ख़ुदा की कठोरता भी रहमत है। देखो यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम के मामला में स्पष्ट इल्हाम देकर जब लोगों ने चीख़ना चिल्लाना शुरू किया तो अज़ाब टला दिया और रहमत के साथ उन पर निगाह की। अत: ख़ुदा की कठोरता में भी एक ख़ास मज़ा है परन्तु उसको वही लोग उठा सकते हैं जो उसके सामने रोते और विनम्रता प्रकट करते हैं। मुझे कई बार आश्चर्य होता है कि लोग अपने जैसे इन्सान की चापलूसी तो करते हैं परन्तु अफ़सोस ख़ुदा की चापलूसी नहीं करते।

दुआ की क़बूलीयत में ठहराव सफलता का कारण है।

यह याद रखो कि दुआ के लिए यदि जल्दी उत्तर मिल जाए तो प्राय अच्छा नहीं होता। अत: दुआ करते हुए निराश न हो। दुआ में जितनी देर हो और इस का ज़ाहिर में कोई उत्तर न मिले तो ख़ुश हो कर शुक्र के सिज्दा अदा करो। क्योंकि इस में बेहतरी और भलाई है। ठहराव सफलता का कारण होता है।

यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम से अज़ाब टलने के कारण

दुआ कामयाबी के लिए बहुत बड़ी ढाल है। यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम रोने धोने और दुआ के कारण आने वाले अज़ाब से बच गई। मेरी समझ में "महातबत" मुग़ाज़बत (दोनों क्रोध करने) को कहते हैं और हूत मछली को कहते हैं और नून तेज़ी को भी कहते हैं और मछली को भी। अत: हज़रत यूनुस अलैहिस्सालम की वह हालत एक मुग़ाज़बत की थी। असल यूं है कि अज़ाब के टल जाने से उनको शिकवा और शिकायत का ख़्याल गुज़रा कि भविष्यवाणी और दुआ यूँ ही व्यर्थ गई और यह भी ख़्याल गुज़रा कि मेरी बात पूरी क्यों न हुई। अत: यही क्रोध की हालत थी। इससे एक शिक्षा मिलती है कि तक़दीर को अल्लाह बदल देता है। और रोना धोना और प्रमाणित हो गए जुर्म को भी रद्द कर देते हैं। ख़ैरात के नियम भी इसी से निकला है। यह तरीक़ा अल्लाह को राज़ी करने के हैं। इल्म ताबीर रोया में माल कलेजा होता है। इसी लिए ख़ैरात करना जान देना होता है। इन्सान ख़ैरात करते समय कितनी सच्चाई तथा दृढ़ता दिखाता है और असल बात तो यह है कि सिर्फ मौखिक कहने से कुछ नहीं बनता जब तक कि व्यावहारिक रंग में लाकर किसी बात को न दिखाया जाए। सदक़ा उसको इसी लिए कहते हैं कि सादिक़ों पर निशान कर देता है। हज़रत यूनुस के हालात में दुर्रे मन्सूर में लिखा है कि आपने कहा कि मुझे पहले ही मालूम था कि जब तेरे सामने कोई आएगा। तुझे रहम आ जाएगा।

ईं मुश्त ख़ाक रा गर ना बख़्शम चह कुनम

ईद की नमाज़ शहर में पढ़ने की ताबीर (अर्थ)

मुंशी रुस्तम अली कोर्ट इन्सपैक्टर दिल्ली के ख़्वाब की ताबीर में फ़रमाया कि "ईद की नमाज़ शहर में पढ़ना बहुत बड़ी सफलता है।"

अबू लहब और हम्मा लतल हतब से अभिप्राय

अबू लहब क़ुरआन करीम में आम है न ख़ास। अभिप्राय वह व्यक्ति जिस में इल्तिहाब तथा इश्तिहाल (भड़कना तथा क्रोधित होने) का माद्दा हो। इसी तरह हम्मा लतल हतब। उपद्रव करने वाली औरत से अभिप्राय है। जो वाचाल हो। आग लगाने वाली चुग़ुलख़ोर औरत आदमियों में शरारत को बढ़ाती है। सअदी कहता है

सुख़न चीन बदबख़त है हिज़म कुश अस्त

सूरः तब्बत पर एतराज़ सुनकर फ़रमाया

दुनिया की दौलत और सल्तनत रश्क़ का स्थान नहीं। परन्तु रश्क़ का स्थान दुआ है। मैंने अपने हाज़िर तथा ग़ायब लोगों में से जिनके नाम याद आए या शक्ल याद आई। आज बहुत दुआ की और इतनी दुआ की कि यदि ख़ुश्क़ लक्कड़ी पर की जाती तो हरी हो जाती। हमारे लोगों के लिए यह बड़ी निशानी है।

(جَزَاكَ اللّٰهُ فِى الدَّارَيْنِ خَيْرًا)

रमज़ान का महीना अल्हम्दो लिल्लाह गुज़र गया। ख़ैरियत और तन्दरुस्ती से यह दिन गुज़र गए। फिर अगला साल ख़ुदा जाने किस को आएगा। किस को पता है कि अगले साल कौन होगा। फिर कितने खेद का स्थान हो गा। यदि अपनी जमाअत के उन लोगों को भुला दिया जाए जो देहान्त कर गए हैं। यह ऐसे वक़्त में फ़रमाया कि जब सूचि में ज़िन्दों के नाम ख़त्म हो रहे थे।

ज़ाहिर परस्ती गुमराही का कारण है

ज़ाहिर परस्ती से यहूदियों पर यह आफ़त आई कि वह मसीह अलैहिस्सलाम का इन्कार करते रहे और न सिर्फ बल्कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी इन्कार करते रहे। उनको यह ख़्याल था कि मसीह आएगा तो एक बादशाह होकर आएगा और बड़ी शान तथा शौकत से दाऊद के तख़्त पर प्रकट होगा और इसके आने से पहले ईलिया आसमान से उतरेगा, परन्तु जब मसीह आया तो उसने ईलिया तो यूहना को बताया और आप बजाय बादशाह होने के ऐसी विम्रता दिखाई कि सिर रखने को भी स्थान न मिला। अब ज़ाहिर परस्त यहूदी कैसे मान लेते। अत: उन्होंने बड़े ज़ोर से इन्कार किया और अब तक कर रहे हैं। यही मुसीबत हमारे ज़माना के मौलवियों और मुल्लाओं को पेश आई। वे प्रतीक्षक हैं कि मसीह और महदी आकर लड़ाईयां करेगा परन्तु ख़ुदा तआला ने यह बात ही समक्ष न रखी थी और बुख़ारी ने يَضَعُ الْحَرْب कह कर उसका फैसला ही कर दिया था फिर भी यह अमन और सलामती के इच्छुक को मानना नहीं चाहते।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 220 से 221 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad